प्रकाशित कर रहा है
पाठ संग्रह न० - 2

हरे कृष्णा हरे कृष्णा हरे कृष्णा

ओम श्री गणेशाय नमाः

स्वामी कुमार जी महाराज सत संग आश्रम मुठी जम्मू पिछले कई बरसों से सनातन धर्म से बाब्सता कई धार्मिक कार्य, इस आश्रम में भी और इस आश्रम से बाहर भी स्वामी जी की सरपरस्ती में अंजाम देते आ रहें है। वादी कश्मीर से निशकासन के बाद की परिस्थिति को नजर में रखकर स्वामी जी को बड़े बुजरगों के अलावा समाज के अतियंत शक्तिशाली स्तून याने नई पोद ने भी बार बार समाज से जुड़े सनातनी कामों को आने वाली पीढियों तक जीवत और महफूज़ रखने के लिए वर्तमान के हालात को देखकर और ध्यान में रखकर अपने संस्कारों और अपने पूर्वजों से मिले हुये उन अनमोल धार्मिक खजानों के निचोड़ को कम समय में सर अंजाम देने की तरफ ध्यान दिलाया ताकि दुनिया के कोने कोने में समय के सताऐ हुए और मौजूदा तेज आंधियों से पैदा हुए हालात से मजबूर समाज के अनमोल रत्न जो कि रोजी रोटी की तलाश में भटकते हैं इन ही संस्कारों के कारण अपने सनातन धर्म से मिले समाज का नाम रोशन करेंगे। और दूसरी तरफ अपने पूर्वजों, जो कि संत ओर मुनी थे, विरसे में मिले सनातनी कार्य कर्मों के अलावा अपने मान मर्यादा के

संस्कारों को भी जिन्दा रख सकेंगे। यही कारण है कि स्वामी जी ने कई बार आश्रम से बाब्सता भगतजनों के अलावा हर किसी अन्दर या बाहर धार्मिक सत संघों में इस नई पोद की कोशिश पर वार्तालाप किया जिस का नतीजा आपके सामने है।

अतियंत तेज्सवी स्वाहाकारों के रुप में यह हवन पुस्तक है

इस हवन पुस्तक में नई पीढी के अरमान याने (१) समय का बचत (२) एक मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाने का फर्ज, कर्म का ठीक रास्ता दिखाने वाली श्रीमदभगवत गीता जी अठारा (१८) अद्‌यायों के अठारा चुने हुये शलोक (३) महा गायत्री के महामंत्र नुमा मंत्र (४) माता पिता का आज्ञाकारी पुत्र श्री महा गणेश (५) निराकार सदा शिव के साकर स्वरूप श्री कृष्ण और जगत जन्नी माता के मन को छूने वाले अनन्त महा दुर्लभ नामों की एक एक माला को इसी पुस्तक नुमा माला को ही लड़ी में पिरोया दिया गया है। बाकी पिछले दो सालों से इसी यज्ञ नुमा माला में पिरोये इन बहुमूल्य मालावो का हूमा और कहीं कहीं इन की पुष्पांजली और हुमा होते रहें हैं। इस तरह बुजरगों के साथ साथ समाज की गहरी नई नजर रखने, नई पीढी ने इस की बहुत तारीफ की। यह कार्य ज्यादा से ज्यादा दो घंटों में पूरा किया जाता है। जबकि इस का फल दो हजार साल तक की गई तपस्या से भी अधिक है। इस के अलावा अगर आप निराकार पर्म पिता सदा शिव के

भिन्न भिन्न साकार नामों का हूम करना या कराना चाहते है तो सबसे पहले अपने दिल में भगवान के वास्ते श्रद्धा विश्वास और प्रेम के साथ भावना उजागर करके पवित्र अग्नि में शुद्ध सामग्री की आहोती स्वाहा करते अर्पन करते जायें। विश्वास रखें कि भगवान उसी तरह आपकी भावना का आदर करेंगे जिस तरह शिबरी के झूठे बेर खा कर किया था। और हाँ अगर आप इन नामों की पुशपांजली करना चाहते है तो इस को शुरू करने से पहले अपने हाथों में पुश्प ले कर इस शलोक का मन में उच्चारन करें :-

शलोक :- ओम ना ना सुगंधित पुश्पानि यथा कालूद भवानी च
पुश्प अंजली मयादतो गरहा - न परमेशवरो।

अब जिस रूप कर औतार में सदा-शिव की साकार रूपी शक्ति की पूजा करना चाहते हो तो उस मुर्ति को सामने रखकर एक नाम पर 'नमाः नमाः' कर के पुष्प डालते जायें। इस के अतिरिक्त मेरी भगवान से बस यही प्रार्थना है कि हे भगवान जिस कलम को आपने जबान दी वो कलम भी आप का ही है और वो ज़बान भी आप की ही है, जिस हाथ ने यह कलम पकड़ा वो हाथ भी आप का ही है। लिखे हुये नाम भी आप के ही हैं और लिखने वाले भी आप ही है। इसी कारण आप ने

इस शरीर नुमा गुड़िया के ढांचे को जिस तरह घुमाना चाहा यह ढांचा घुमता रहा। इस शरीर नुमा ढांचे में पल रहा 'मै' मै का मूल कारण भी तो आप ही है। इसी के साथ जो काम मुझे स्वामी जी ने सौंपा था वो काम मै आज उनकी सरपरस्ती में और दीगर धार्मिक कार्यों, श्रद्धा और विश्वास और भक्ति भाव से शोभाइमान भगतों के साथ समय समय पर मशवरा करने के बाद और स्वामी जी के आदेश की पालना करने के बाद इसी श्री कुमार जी महाराज गीता सत संग आश्रम मुठी के नाम की इस तरह वजाहत की जाती है। स्वर्गीय पिता श्री ने सरकारी पहचान के वास्ते अपने ही एक नये जन्मे बच्चे का नाम 'महाराज कृष्ण' रखा जबकि माता श्री प्यार से इस बच्चे को कुमार जी के नाम से पुकारने लगी और इस बच्चें को बड़ा होने पर भगत जन 'स्वामी कुमार जी' कह कर पुकारने लगे। इन अलग अलग नामों के जोड़ के एक नाम ने श्रीमद भगवत गीता जी को पढाने और समझाने का एक बहुत बड़ा कार्य हाथ में ले कर अपनी पहचान इस संसार में स्वामी कुमार जी महाराज गीता सत संग आश्रम मुठी के नाम से कराई। अब हरे कृष्णा का नाम ले कर बेजबान कलम को विश्राम दे रहा हूं।

'एक कृष्ण भक्त'

आर० एल० भट

एक छोटा सा अनुरोध

यह सत्य है कि मानव जीवन प्राप्त करना एक सहज बात नहीं है, ईश्वर की इस कृपादेन का ऋण हम कभी चुका नहीं सकते हैं, तो क्यों न नतमस्तक प्रभु भजनों, सत्संगों, महात्माओं के प्रवचनों, कार-सेवाओं आदि शुभ कार्यों में जुटकर जीवन को सफल बनायें ।

हरे कृष्णा   हरे कृष्णा   हरे कृष्णा

प्रार्थी :– लेखक
रोशन लाल काचरू
9682123232

Roshan Lal Kachru
MA., B. Ed. (Writer)
J & K State Awardee 1995
Elected Executive Council
Member of Confederation of
UNESCO Clubs and Associations
of India (CUCAI)
Medals of Honour from USO/USI, New Delhi
Retd. Sr. Incharge
Tyndale Biscoe School, Srinagar, Kashmir
Ex. Principal : Khalsa High School, Sgr, Kmr.
Writer :- 'मेरी यादें' इत्यादि

प्रस्तावना
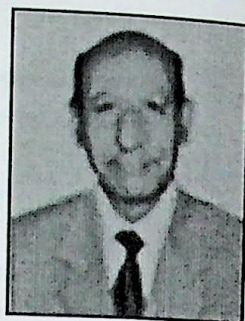
'स्वामी कुमार जी महाराज गीता सत संग आश्रम मुठी जम्मू फेज सेकडं' द्वारा स्वयं स्वामी कुमार जी के नेतृत्व में तैयार किया गया 'पाठ संग्रह न० २' जब मेरे पास भेजा गया तो उस समय मै श्रीनगर में था। यद्यपि उस दिन तक मैं ने स्वामी कुमार जी के दर्शन नहीं किये थे और न ही कदापी पारस्परिक वार्तालाप भी हुआ था लेकिन इन के विषय में मैने अवश्य सुना था। इस 'यज्ञ-पाठ-भजन' सम्बन्धी 'पाठ संग्रह न० २' पर दृष्टि डालकर मै सोच में पड़ गया कि यह संग्रह जो निरीक्षण हेतु मेरे पास भेजा गया है, क्या मै इस कार्य में सफल हो सकता हूँ। क्योंकि मैं स्वयं अज्ञानी हूँ। विशेषकर जब मैने पाया किसी अहिन्दी भाषी महानुभाव ने बड़े परिश्रम से उर्दू शब्दों का प्रयोग हिन्दी लिपि में करके इसे तैयार किया है। फलस्वरुप निश्चय ही वैदिक शब्दों के उच्चारण में भिन्नता आ सकती है। अशुद्ध उच्चारण से अर्थ भी उल्टे हो सकते हैं, तो क्या करुँ! अचानक एक अध्यापक और एक अल्प कहानीकार होने के नाते मेरे मस्तिष्क में यह दोनों रूप जाग गये और 'कबीर जी' का यह दोहा स्मरण आया :-

"जात न पूछो साधु की, पूछ लीजियो ज्ञान,
मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान।।"

मैं ने संकल्प लिया इस कार्य का निरुपण, प्रत्यंकन (Transcription) करने का प्रयास अवश्य करूँगा।

मैं संकल्पित कार्य आगे बढाता रहा, दिल्ली आकर। अचानक मुझे जम्मू जाना पड़ा। स्वामी जी के दर्शन की जिज्ञासा होने पर मैं प्रस्तुत संग्रह लेकर इन के पास 'मुठी आश्रम' चला गया। श्रीमद् भागवत के प्रवचन में मग्न तथा अन्य कार्यों में माघ मास होने के कारण व्यस्त होने पर भी स्वामी जी ने निजि तौर पर मेरे और मेरे भाई शिबन जी का आतिथ्य भाव दिखाया हम दोनों आभारी हैं। संग्रह मैने इन्हें दिखाया। इन्होंने सांत्वना दिखाई। प्रसन्न भी हुए। मैं ने अपनी लिखित पुस्तक इन्हें पेश की। 'मेरी यादें' पुस्तक का नाम देखकर आशीर्वाद दिया तथा इस पर ऐसे कार्यों में आगे बढ़ने का परामर्श दिया। मुझे प्रोत्साहन मिला।

दिल्ली वापस आकर दैवयोग से अपने शुभचिन्तक समीपी पड़ोसी 'श्री मोती लाल जी भट्ट' पूर्व प्रधान 'हरमुख चैरिटेबल सोसाइटी, विपिन गार्डन, नई दिल्ली-59' से मुझे स्वामी जी की प्रकाशित उर्दू लिपि में एक प्रति प्राप्त हुई । जो मेरा एक सहारा बन गई।

माता सरस्वती की कृपा से उपरोक्त उर्दू प्रकाशन का, श्री मस्तबब आश्रम की प्रकाशित 'नित्य पाठ विधि' 'विजयेश्वर पञ्चांग' पञ्चस्तवी' श्रीमद्भगवद्गीता आदि का सहारा लेकर मैं भक्तजन के सम्मुख "स्वामी कुमार जी महाराज गीता सत संग आश्रम मुठी जम्मू फेज सेकंड" द्वारा प्रकाशित, पाँचों होम मालाओं का सक्षिप्त में सम्पूर्ण प्रस्तुत "पाठ संग्रह न० 2" रख रहा हूँ।

इस कार्य के लिए मुझे आश्रम के एक अग्रिम सेवक तथा स्वामी कुमार जी के परम भक्त/शिष्य श्री रतनलाल जी भट्ट का हर पल, हर प्रकार सहयोग मिला है जिसके लिए मैं उनके प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ।

इसके अतिरिक्त हम आश्रम सदस्य श्री प्यारे लाल जी बख्शी जो इस संग्रह के उर्दू पाठय पुस्तक के लेखक हैं, के प्रति उनके अथक परिश्रम के लिए अपना आभार प्रकट करते हैं।

उन उर्दू भाषी महानुभाव की भी सराहना करना अपना कर्तव्य मानता हूँ जिन्होंने इस प्रस्तुति के पूर्व उर्दू भाषी होकर हिन्दी लिपि का अथाह प्रयास किया हैं।

यहाँ मैं यह अवश्य कहना चाहता हूं कि इस असाधारण कार्य के सम्पूर्ण करने की दृढ़ता में अधिक जागरुकता मुझमें तब आयी जब मैने स्वामी कुमार जी के दर्शन किये।

यह एक कर्मठ, सुकर्मी, समाज सुधारक तथा धर्म प्रचारक हैं। इन में अतिथि देवोभव के आतिथ्य भाव भरे हैं। इन में अपनी हिन्दु जाति में धार्मिक जागरुकता जगाने की लगन है। इन सब सुकर्मों के साक्षी मेरे वे 22/23 जनवरी 2019 के 'अँखियन देखी' दो दिन हैं जब मेरा इन से मिलन हुआ था।

दैव योग से आश्रम में निवास करते सनातन हिन्दु धर्म में लाखों वर्षों से विरासत में मिली संस्कृति को अपने प्रवचनों द्वारा जागृत करने की अथाह प्रयत्न करते है। यह एक सक्षम आश्रम चालक हैं जिस कारण ये बधाई के पात्र हैं।

वर्तमान युग का दृष्टि गोचर करते हुए स्वामी कुमार जी की जैसी आकाँक्षाओं भरे संकल्प का एक आशावान बनकर, मेरा विनम्र अनुरोध है कि हमारे बच्चे, युवक, वृद्ध, नर-नारी, अपने सनातन धर्म, हिन्दु धर्म से लाखों वर्षों से विरासत में मिली हुई सभ्यता और संस्कृति से परिपूर्ण परिचित हों। अपने इन संस्कारों को, सभ्यता और संस्कृति को, इस की महत्ता और गरिमा को पहचान कर, भूले-भटकों में इस की तथा मातृभूमि की जागरुकता जगाकर गर्व से कहें कि हम भारतीय हिन्दू है। धन्यवाद सहितः-

माता दुर्गा का एक आशावान सेवक

रोशन लाल काचरू

304 ए, विपिन गार्डन, ककरोला

नई दिल्ली-110059

मो० : 9682123232

वक्त की पुकार

"स्वामी कुमार जी महाराज गीता सत संग आश्रम मुठी जम्मू"

लेखक प्यारे लाल बक्शी

श्री परमपिता परमेश्वर एक है मगर अनगिन्त भी है, एक इस प्रकार है क्यों कि वह अत्यन्त शक्ति शाली स्वरूप में हर चर, अचर में विराजमान है, मेरे कहने का अर्थ यह है कि भिन्न-२ स्वरूपों मे भिन्न शक्तियों में इस सारे ब्रह्माण्ड में उपस्थित है। अब प्रश्न उठता है कि क्या हम उन शक्ति का यानि उस के स्वरूप उचारण एक नाम, से करे, या दशाम से करे, एक फूल माला से करे। सहस्त्र माला से करे या बार बार बिना रूके नामो से करे। मगर ध्यान रहे कि उन नामों के उचारण में भाव होना चाहिए। अभाव नही, क्योंकि उस के दरबार में भाव का मोल है, अभाव का नहीं।

मेरे कहने का मतलब यह है (तात्पर्य यह है) कि श्रीमद् भगवत गीता जी की (१८) अध्यायों में ७०० श्लोक है। उनके उचारण करने से महापापी से पापी इस कठिन भवसागर से तर जाता है। जब कि इसी श्रीमद्भगवद्गीता जी की अष्टदशा (१८) शलोकी गीता जी का बार-बार उच्चारण करने से एक अज्ञानी नास्तिक भी महाज्ञानी सत्य-जन बन सकता है। और हाँ इसी महा ग्रन्थ की सप्तश्लोकी गीता जी भी है। जिसका मंथन करने से ओर सच्चे शुद्ध भक्ति-भाव वाले मन से इस पर मनन करने से एक पवित्र आत्मा, इसी परमपिता परमेश्वर जो कि

महा प्रज्लित ज्योति स्वरूप भी है, में लीन हो जाता है। इतना ही नहीं इस भवसागर से पार करने वाले इस महापवित्र ग्रन्थ का एक शलोकी गीता जी है। जिसका एक शलोक का सच्चे मन से उच्चारण करने से और इसी एक शलोक अर्थ ये कि राह पर चलने से भी यानि इस नाशवान संसार की संसकारी कामनाओं, वासनाओं, काम-मोह, ममता और अंहकार को इसी एक शलोक के राह पर चलने से यानि ज्ञान से भरपूर अग्नि में भस्म करके एक भक्ती-भाव और निशकाम सेवा भाव से भरपूर मानव सदा के लिए जन्म और मरन के महादुखःदायी गर्भयात्रा के संकट से मुक्ति प्राप्त करके उसी महा-महा प्रज्लित तेजोभ्यप्रकाश में लाभ हो जाता है। जिस से वह अलग हुआ होता हैं।

दूसरी बात अपना यह बहुमूल्य जन्म सफल बनाने के लिए, इसी बहुमूल्य मनुष्य रूपी शरीर के द्वारा निशकाम सेवा भाव से तन-मन और इच्छा शक्ति अन्न-धान और धन से दीन दुख्यों, लाचारों और जरूरतमन्दों की सहायता करने में कभी कोहताई न बरते, मगर ध्यान रहे कि मन से उस अत्यंत महा शक्तिशाली परमेश्वर की सुमरण में उसी तरह लीन रहे, जिस तरह एक समय का डाकू रत्नाकर (मरा-मरा) का डाकू शब्द जपते-जपते रामा-रामा के शब्दों में लिप्त होकर अति पवित्र ग्रन्थ रामायण का रचनाकार बने। यही डाकू बाद में महाऋषि वाल्मिकी बन गये। जब कि यह मारा-मारा गुरू शब्द डाकू (रत्नाकर) को सप्तऋषियों ने जपने के लिये दिया था, बिल्कुल आज उसी तरह स्वामी कुमार जी महाराज संचालक गीता सतसंग आश्रम मुठी फेज-II अपने शिष्यों के साथ-साथ इस

पंडित समाज से बाबसता पवित्र कश्यपऋषि के सन्तानों को भी बार-बारऔर हर सतसंग (द्वारा) में कहते रहते है, कि अपना यह अति बहुमूल्य मनुष्य जन्म सफल बनाने के लिए ८४ लाख योनियों के चक्रव्यूह से बचने के लिए और अति कठिन गर्भयात्रा यानि जन्म और मरन के महादुखःदायी संकट से मुक्ति पाने के लिए निषकाम सेवा भाव के साथ-साथ अति बहुमूल्य सनातनी सहस्त्र नामों को छेड़े बिना मगर इन्ही सहस्त्र नामों मे से एक-एक माला तैयार की गई, मतलब इस माला का उच्चारण करने या इसका हूमा करने से समाज को एक बार फिर बहुत ऊंची-ऊंची पदवीयों तक पहुंचाने के लिए समय को ध्यानपूर्वक उनकी ओर अपने पूर्वजों के संसकारी और उन द्वारा किये जाने वाले यज्ञों को अन्तपूर्व तक अमर रखने के लिए यही एक माला वली प्रकाशित की जाती है।

क्योंकि यह इस समय की पुकार है। आखिर पर मैं आदरणीय श्री रोशन लाल जी काचरू का अपने हृदय से प्रेम पूर्वक नमन करता हूं जिन्होने उर्दू भाषा में लिये हुये हूमा/पुष्प अर्चन की एक-एक माला का सरल हिन्दी भाषा देकर (जो कि देश जन प्रिय भाषा) प्रकाशित करने के लिए समय की पुकार को ध्यान में रखकर बहुमूल्य समय दिया है।

लेखक
प्यारे लाल बक्शी
बूटा नगर जम्मू
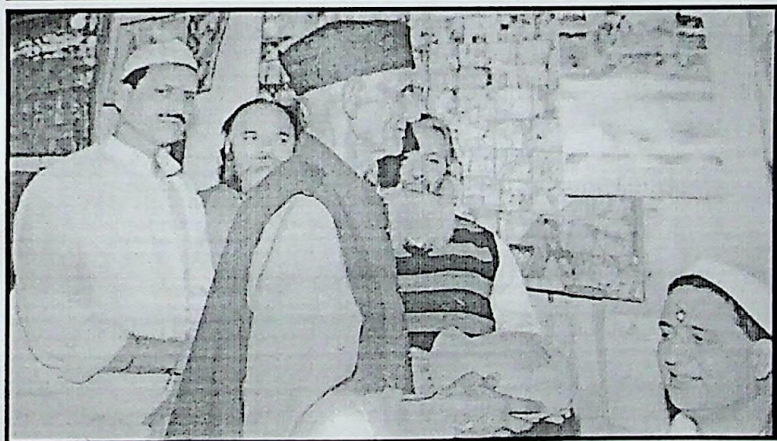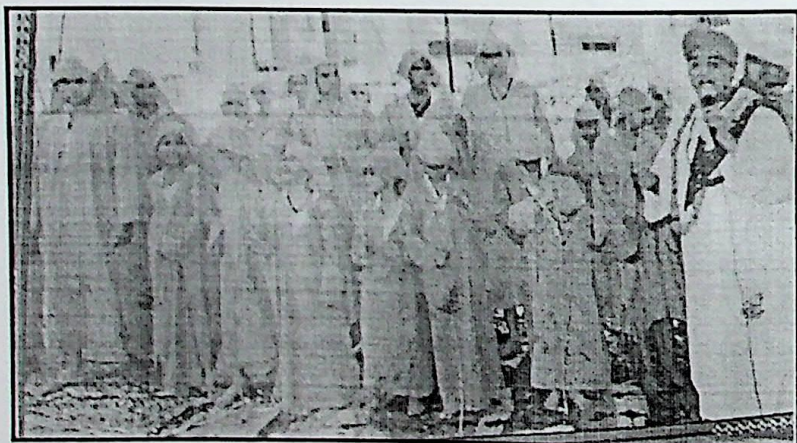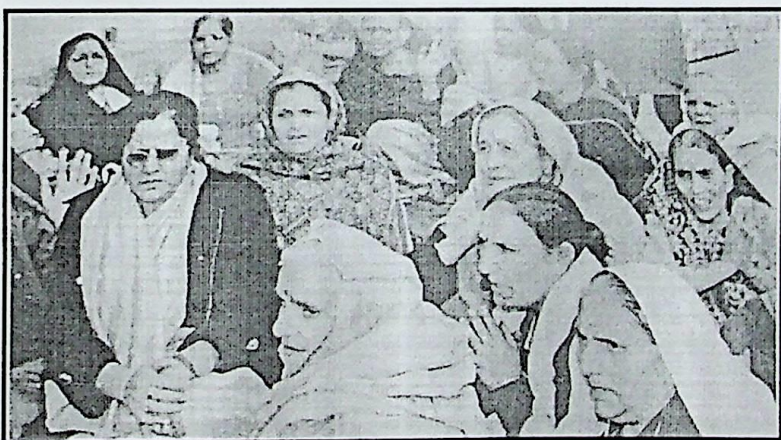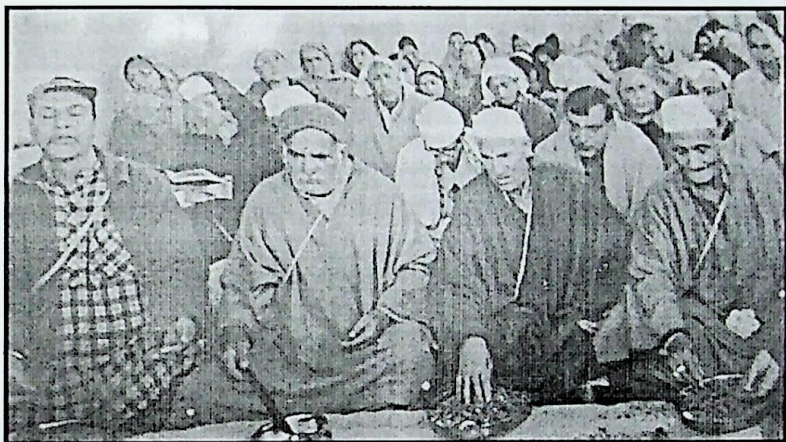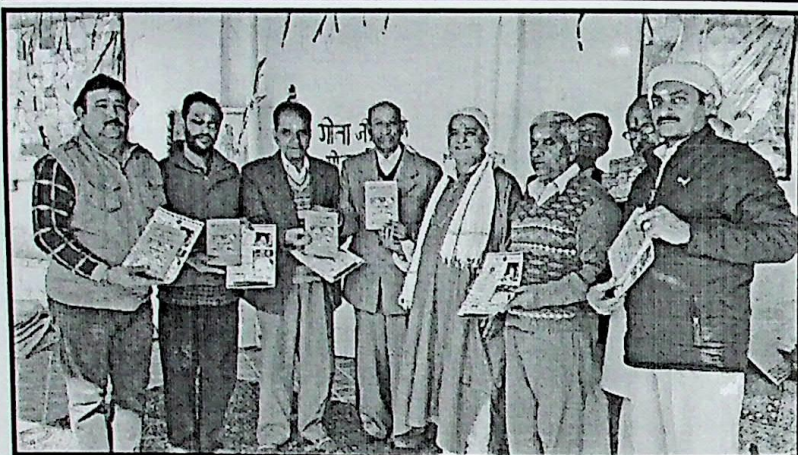
।। विषय सूची ।।

।। सामग्री ।।

जल, गंगाजल, पंजामृत (दूध, दही, घी, शहद शक्कर), नारियल, चन्दन, रौली, अक्षत, पुष्प, पुष्पमालायें, मिट्टी धूप, दीप, नेवैध, अक्षतफल, ब्रय, लौंग, इलायची, आसन, अगरबत्ती, घी पात्र, पूजन पात्र आरती, काला तिल पात्र, गिलास, घड़ा, बाल्टी २, क० गण, थाल ५, लकड़ी, चूना, चावल, आटा, नीलोफर, जल, चावल, नाबद, गूगल, बादाम, सिन्दूर, काफूर, केसर, शहद, मिट्टी का कलश, टाकू, बड़ा दीप, कलश के लिए वस्त्र, तौलिया, अखरोट, श्रीफल, कन्द, किशमिश, रूई, खजूर, श्रीफल, जट्टाधारी नारियल, दक्षिणा, बड़े चम्मच २, वुमन होर, स्मदाय ३, (तुलमूर), लड्डू
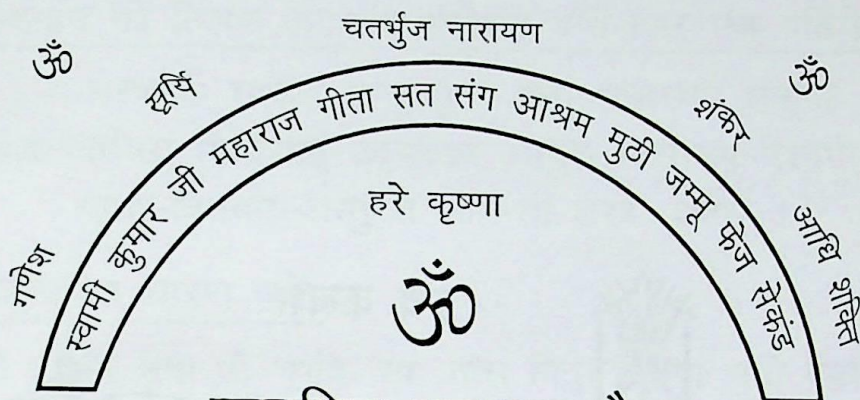
प्रकाशित कर रहा है

पाठ संग्रह न0–2

कलुश देवता के रूप में गणेश, सूर्या, विष्णो, शंकर और माता आदि शक्ति की पूजा अर्चना/होमा एक एक माला

श्री गणेश, एक माला
श्री सूर्य देवता, एक माला
श्री विष्णो भगवान, एक माला
श्री शंकर भगवान, एक माला
जगत जनन्नी माता भवानी एक माला

प्रेप्युन :– आरती और पूर्ण आहोती

इन्द्र कलश
चन्द्रमा
क्षेत्र पाल
दीप
सूर्य
प्रेणीत पात्र
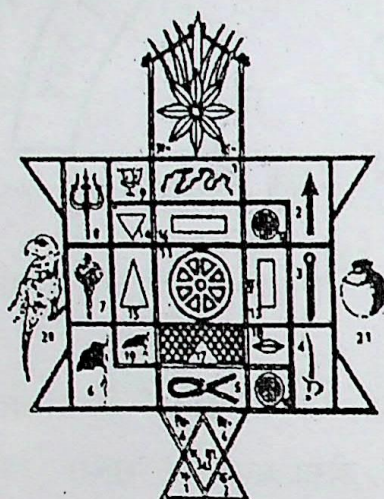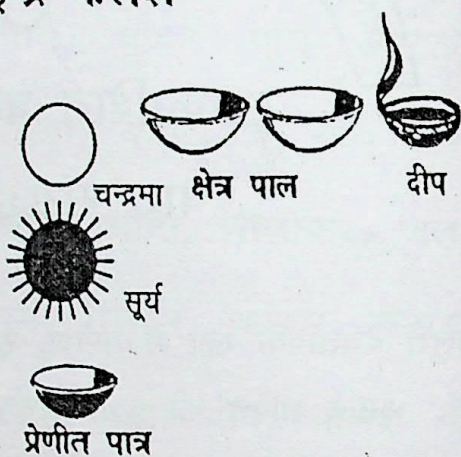
आरम्भ
पूजा विधि

यजमान को तिलक लगाकर नारीवण बाँधें-फिर मंत्र पढिये:-

ॐ मन्त्रार्था: सफला सन्तु पूर्णा सन्तु मनोरथाः शत्रूणां
बुद्धि-नाशोस्तु मित्राणाम्-उदयस्तव आयुर-आरोग्यम्-ऐश्वर्यम्-
एतत-त्रितयम-अस्तु ते जीव-त्वं शरदः शतम् ।

यज्ञोपवीत धारण करें :-

ॐ गायत्री नमः ॐ भूर्भुवः स्वः तत्स वितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो योनः प्रयोदयात् ।

मंत्र पढ़ें :-

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापर्तेयत सहजं पुरस्तात् आयुष्यं
अग्रयं प्रतिमुच्त्र शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।

हृदय और मुहँ पर जल छिड़कते पढ़े :-

ॐ तीर्थ-स्नेयं तीर्थम-एव समानानां भवंति मानः, शंस्योर-
अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ्ः मत्यरस्य रक्षाणो ब्रहमणस्पते ।

तीन बार आचमन करे :-

ओं अमृतोपृतन मसि स्वाहा ओ अमृतापदानम्सी स्वाहा ।
ओम सीतम यस्य शरीरमयी शरीरयः शरीरित्याम स्वाहा ।।

पवित्र धारण करें :- (अनामिका अंगुली की ऊपर के पर्व पर)

वसोः पवित्रम-असि श्यातधारं
वसूनां पवित्रम-असि सहस्रधारम,
अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि
रायस्पोषेण बहुला भवन्ति ।।

अपने आप को तिलक लगाते पढ़े :-

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच -
भूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय
आत्मने नारायणाय-आधार-
शक्त्यै समालभनं गन्धोनमः
अर्धोनमः पुष्पंनमः ।।

पृथ्वी को नमस्कार करके पढ़े :-

फूल, तिलक, चावल चढाते पढे :-

प्रींपृथिव्यै आधार शक्तयै समालभनं गन्धोनमः अर्धोनमः पुष्पं नमः। पृथ्वि त्वया धृता, लोका देवी त्वं च धारय मां देवी पवित्र कुरू चासनम् ।

रतनदीप चोंग (दीप) को तिलक फूल चढ़ाते पढे :-

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमरा पहः

प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः

धूप को तिलक अर्ध चढ़ाते पढे :-

वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढयो गन्धोत्तमः आधार
सर्वदेवानां धूपोयं प्रति-गुह्यताताम् ।।

दर्भ के विष्टर सहित थाल में जल डालते हुए पढे :-

यत्रास्ति-माता, न पिता न बन्धुर-भ्रातापि नो
यत्र सुहृत-जनश्च, न ज्ञायते, यत्र दिनं न
रात्रि-स्तत्रात्मदीपं शरण प्रपद्ये । आत्मने
नारायणाय-आधार-शक्तयै धूप-दीप संकल्पात्-
सिद्धिर-अस्तु धूपो, नः दीपो नमः । ॐ

अब कलश पर हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए पानी छिड़के :-

ॐ अस्य श्री आसन-शोधन-मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ-ऋषिः
सुतलं छन्दछः कूर्मो देवता आसन-शोधने विनियोगः ।

अब गणेशजी का ध्यान करें :-

पहले तीन फूल और तिलक पानी भरे गिलास में डाले :-

सं वः सृजामि हृदयंसंसृष्टं मनो अस्तु-वः।
संसृष्टः- तन्वः सन्तु वः। संसृष्टः प्रणोऽस्तु वः।
सं या वः प्रिया-स्तन्वः सं प्रिया हृदयानि वः,
आत्मा वो-अस्तु सं प्रियः संप्रिया तन्वोमम ।

इस जल से छीटें विष्टर के साथ कलश पर दीजिये :-

जल की छीटें दर्भ के तिनको अथवा विष्टर से देते हुये पढ़ें :-

अश्विनोः प्राणः तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव,

मित्रा-वरुणयोः प्राणः-तौ ते प्राणं दत्तां तेन

जीव बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव,

समस्त-देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामि नमः

अब कलश पर शुद्ध जल डालते पढें :-
ओं भू पोरुषं आवाहयामि नमः,
ओं भुवः पोरुषं आवाहयामि नमः
ओं स्वः पोरुष आवाहयामि नमः
ओं भू भुवः स्वाहाः पोरुषं आवाहयामि नमः
तीन बार गायत्री मंत्र पढें :-
कलश देवता पर तीन फूल चढ़ायें :-
ऊँ गायत्रये नमः, ऊँ भु भूर्वः स्वः
तत्-सवितु-वर्रेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

।। श्री गणेश स्तुति ।।

दर्भ के दो तिनके अनामिका अंगुलियों में रख कर गणेश जी का ध्यान रखते हुये पढें :-
शुक्लाम्बर-धरं विष्णुं शशिवर्ण चतुर्भु-जम्,
प्रसन्न-वदनं ध्याये सर्व विध्नोप-शान्तये। अभि-प्रीतार्थ-सिद्धयर्थ पूजितो यः सुरैर-अपि, सर्व-विध्न छिदे तस्मै गणाधि-पतये नमः।
कर्पूर-गौरं करुणाव-तारं संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम,
सदा रमन्त हृदयार-बिन्दे भवं भवनी-सहितं नमामि ।
गुरु-ब्रह्मा गुरु-र्विष्णु, गुरुः साक्षत्-महेश्वरः,
गुरुव जगत सर्व तस्मै श्री गुरुवे नमः, ओं श्री गुरुवे नमः
श्री परम गुरुवे नमः, श्री आचार्यः नमः परम आचार्यः नमः
आदि सिद्धि भवन्यम ।।
ओं अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तंयेन चराचम, तत्पदं दर्शित येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

।। श्री गणेश स्तुति ।।

सिन्दूर-कुंकुम-हुताशन-विद्रुमार्क, रक्ताब्ज-दाडिम-निभाय-चतु-र्भुजाय।
हेरम्ब-भैरव गणेश्वर-नायकाय, सर्वार्थसिद्धि-फलदाय गणेश्वराय ।।

मुख्यं द्वादश-नामानि गणेशस्य महात्मनः।
यः पठेत्-तु शिवोथ्तानि स लभेत्-यिद्धिम्-उत्तमाम् ।
प्रथमं वक्रतुण्डं तु, चैकदन्तं द्वितीयकम्, तृतीयं कृष्णपिंगं तु,
चतुर्थ च कपर्दिनम्, लम्बोदरं पंचमं तु, षष्ठं विकटम्-एव च,
सप्तमं विध्नराजेन्द्रं, धुम्रवर्ण तथाष्टमं। नवमं भालचन्द्रं तु,
दशमं तु विनायकम्, एकादशं गणपतिं, द्वादश मन्त्र-नायकम् ।
पठते श्रृणुते यस्तु, गणेश-स्तवम्-उत्तमं, भार्यार्थी लभते भार्या,
धनार्थी विपुलं धनम्। पुत्रार्थी लभते पुत्रम्, मोक्षार्थी परमं पदम्,
इच्छाकामं तु कामार्थी, धर्मार्थी धर्मम्-अक्षयम्।। सुमुखैश्चैक-
दन्तश्च, कपिलो गजकर्णकः, लम्बोदरश्च विकटो, विध्नराजो
गणाधिपः। धूम्र-केतु-गणाध्याक्षो, भालचन्द्रो गजाननः, द्वादशै-
स्तानि-नामानि, गणेशस्य महात्मनः, य पठेत-श्रृणुयात्-वापि स
लभेत् सिद्धिम्-उत्तमाम्। विद्यारम्भे, विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा
संग्रामे संकटे चैव, विध्नस्तस्य न जायते ।।

।। भगवान कृष्ण का ध्यान ।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्ण शुभांगम ।
लक्ष्मीकान्त कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधर माधव गोपिका वल्लभं, जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे ।।
अच्युतं केशव सत्य-भा-माधवं, माधवं, श्रीधरं राधिकाऽराधितम्।
इन्दिरा मन्दिरं चेतसा सुन्दरं, देवकी नन्दनं नन्दनं सन्दधे ।।
विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे, रुक्मिणी रागिणे जानकी जानये।
वल्लवी-वल्लभा-याऽर्चिता-यात्मने, कंस-विध्वंसिने-वंशिने-ते-नमः।।

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्,
यत् कृपा तम्-अह वन्द, परमानन्द-माधवम् ।।३।।
नमो ब्रह्मण्य-देवाय, ग्रोब्रह्मण-हिताय च,
जगत्-हिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमोनमः ।।४।।
कृष्णाय वासुदेवाय, देवकी-नन्दनाय च,
नन्द गोपकुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः ।।५।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वम्-एव,
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव सर्व मम देव देव ।।६।।

शंकर प्रार्थना

प्रणतोस्मि महादेव, प्रपन्नोस्मि सदाशिव,
निवारय महामृत्युं, मृत्युंजय नमोस्तुते ।
मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम,
जन्ममृत्यु-जरारोगीः, पीडितं भवबन्धनात् ।।
कर्पूर-गोरं करुणावतारं, संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम् ।
सदा रमन्तं हृदयारविन्दं, भवं भवानी सहितं नमामि ।।
हर शम्भो महादेव, विश्वेशामरवल्लभ ।
शिव शंकर सर्वात्मन्, नीलकण्ठ नमोस्तुते ।
तव तत्त्वं न जानामि, कीदृशोसि महेश्वर,
यादृशोसि महादेव, तादृशाय नमो नमः ।।
आधीनाम्-अगदं दिव्यं, व्याधीनां मुलकृन्तनम्,
उपद्रवाणां दलनं, महादेवम्-उपास्महे ।
आत्मा त्वं गिरजा मतिः, परिजनाः प्राणाः शरीरं गृहं ।
पूजा ते विषयो-पभोगरचना निद्रा समाधि स्थितिः ।

भगवान शंकर का ध्यान करें :-

भगवान शंकर पर फूल चढ़ाते हुये पढें :-

नाग्रेन्द्र-हाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्ग-रागाय
महेश्वराय, देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकारा
नमः शिवाय । मातंग-चरमा-म्बर-भूषणाय
समस्त-गीर्वाण गणिार्चिताय त्रेलोक्यनाथाय पुरान्तकाय
तस्मे मकाराय नमः शिवाय । वशिष्ठ-कुम्भोत-भव-गौतमादि

मुनीद-वंद्याय गिरीश्वराय,
श्री नीलकण्ठाय वृष-ध्वजाय तस्मै वकारायनमः शिवाय।
यज्ञ स्वरुपाय जटाधराय पिनाक-हस्ताय सनातनाय।
नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय।
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं,
पूजा-ते विषयाद-भोग रचना, निद्रा समाधिस्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिण विधिः स्त्रोत्राणि सर्वा गिरः।
यत्यत् कर्म करोमि तत् तत्-अखिलं शम्भो-स्तवाराधनम्।।
उभाभ्यां जानुभ्यां शिरसा-उरसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः।
शिवायनमाःओम शिवायनमाःओम, शिवायनमाःओम नमाः शिवाय।

मूल्तू ब्रह्मरूपाये मधितो वेशनो रूपीने
अगर्ता शिव रूपाये ह ईक भलविम शिवार्पनम

शिवायनमाः ओम शिवायनमाः ओम नमाः शिवाय

भलोशटकम ईदपुनेम याः फटि शिवस्नाधू
सर्व पापविनरमुक्त्तो शिवलोकम वापयोयात

इति श्री भलोशटकम स्मपूरणम

अब तीन बार इस मंत्र का उचारण करें और फूल डालें :-

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारूकमिव् बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय
माऽमृतात्।।
तीन बार पढें :-

घर में सुख शांति के लिए इस मन्त्र का उच्चारण हर समय करते रहें।

ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च,

मयस्कारय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

कलश को नमस्कार करते हुए तीन बार पढे :-

आयातु वरदा देवी त्रयक्षरा ब्रह्मवादिनी।
गायत्री च्छन्दसा मातर्-ब्रह्म-योने-नमोस्तुते (तीन बार पढ़िये)
भद्रं-पश्येम-प्रचरेम, भद्रं-भद्रं वदेम श्रृणुयाम भद्रम। तन्रो मित्रो वरुणो माम-हन्ताम-अदितिः सिन्धुः, पृथ्वी उत द्योः। अभि नो देवीरवसा महः शर्मणा नृपत्नीः, अच्छिन्न-पन्नाः सचन्ताम्।
इहेन्द्राणीमु-पह्वये, वारुणानीं स्वस्तये, अग्नायीं सोमपीतये।।
मही द्यौः पृथ्वी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्, पिपृतां नो भरीमभिः।
तसोर्-इत्-घृतवत्-पयो, विप्रा रिहन्ति धीतिभिः, गनधर्वस्य ध्रवे पदे। स्योना पृथिवी भवानृ-क्षरा, निवेशनी, यच्दाऽनः शर्म सप्रथः।
अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णु-व्रिचक्रमे पृथिव्या सप्त धामाभिः इद्रं विष्णु विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्य पांसुरे। त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः, अतो धर्माणि धारयन्। विष्णोंः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पृशे, इन्द्रस्यः युज्यः सखां तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्।।
तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।।
ॐ गायत्रयै नमः, ॐ भुर्भवः स्वः-तत्-सवितु-र्वरेण्यं भार्गो देवस्य धीमही धियो यो नः प्रचोदयात् (तीन बार पढ़े)।

अब क्षेत्रपालों को अर्ध डालते हुये पढ़े :-

अश्वमेधे घोराणामार्षम्।। ॐ द्रष्ट्रे नमः, उपद्रष्ट्रे नमोऽनुद्रष्ट्रे नमः ख्यात्रे नमः उपख्यात्रे नमो, नुकशास्त्रे नमः, श्रृण्वते नमः, उपश्रृण्वते नमः, सते नमः, असते नमो, जाताय नमो, जनिष्यमानाय नमो, भूताय नमो, भविष्यते नमः, चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमो, मनसे नमो, वाचे नमो, ब्रह्मणे नमः, शान्ताय नमः, तपसे नमः।। भूतंभव्य भविष्यत्-वषट्-स्वाहा नमः, ऋक्-साम-यजु-र्वषट् स्वाहा नमो, गायत्री त्रिष्टुप् जगती वषट् स्वाहा नमः। पृथ्वी अन्तरिक्षं द्यौर्वषट् स्वहा नमः। अन्नं कृषिवृष्टिः वषट स्वाहा नमः, पिता पुत्रः पौत्रो वषट् स्वाहा नमः। प्राणो व्यानोऽपानो वषट्स्वाहा नमो, भूर्भवः स्वर्वषट् स्वाहा नमः। यो विश्व-चक्षुर-उत-विश्वतो मुखो विश्वतो हस्त, उत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमते संपतत्रै-र्द्यावापृथिवी जनयन् देव एकः।। फल चढाये :-

ॐ आब्रह्मन्-ब्राह्मणो ब्रह्म-वर्चस्वी जायताम-अस्मिन्-राष्ट्रे, राजन्य इषव्यः शूरो महारथो जायतां, दोग्ध्री धेन-वोंढा-नड्वान्-आशुः सप्ति-र्जिष्णू-रथेश्ठः, पुरन्धि्र-र्योषा, सभेयो, युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्या वर्षतु फलवतीर्न ओषधयः पञयन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

अब कलश पर दूध और कंद चढाते पढें :-

ओम खराज्य, सम मिश्रम शभर्धनास्मन्तम शठरसीज स्मायुक्तम ग्रहानम्म नवीदे कल्शि देवता भयाः मात्रा मधोप्रक्म स्मर्पयामी नमाः

रतन दीप, धूप और काफूर चढाते पढें :-

(ओम तेज्सवी, सकुर्म असी ज्योत्रासी,धामासी, प्रेमदेवानाम अनादर्शटम देविज्योबेम देवता बयूग्रह्मभी यज्ञबियो ग्रहनामी। धूप्म, रत्नदीप्म काफूरम्च प्रकल्पयामी नमाः--- अब आरती करें :-

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे।
उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे ।।
घोरं हर मम नरक रिपो, केशव कल्मषभारं।
माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं, कुरु भव-सागरपारम्।।
घोरं हर मम० ।।१।।
जय जय देव जया-सुरसूदन, जय केशव जय विष्णो।
जय लक्ष्मीमुख-कमल-मधुव्रत, जय दशकन्धर जिष्णो।
घोरं हर मम० ।।२।।
यद्यपि सकलम्-अहं कलयामि हरे,
नहि किम्-अपि स सत्वम। तत्-अपि न मुञ्चति

माम्-इदम्-अच्युत, पुत्रकलत्र-ममत्व। घोरं हर मम० ।।३।।
पुनर्-अपि जननं पुनर्-अपि मरणं, पुनर्-अपि गर्भ-निवासम्।
सोढुम्-अलं-पुनर-अस्मिन्-माधव, माम्-उद्धर निजदासम्।
घोरं हर मम० ।।४।।
त्वं जननी जनकः प्रभुर्-अच्युत, त्वं सुहृत्-कुलमित्रम।
त्वं शरणं शरणा-गतवत्सल, त्वं भव-जलधि-वहित्रं
घोरं हर मम० ।।५।।
जनक-सुता-पति-चरण-परायण, शंकर-मुनिवर-गीतं।
धारय मनसि कृष्ण-पुरुषोतम, वारय संसृति-भीतिम्।।
घोरं हर मम० ।।६।।

गौरी स्तुतीः

ॐ लीलारब्ध–स्थापित–लुप्ताखिल–लोकां,
लोकातीतै–र्योगिभिर्–अन्तर्–हृदि–मृग्याम्।
बालादित्य–श्रेणि–समान–द्युति–पुंजां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईडे।।

आशा–पाश–क्लेश–विनाशं विदधानां,
पादाम्भोज–ध्यान–पराणां पुरुषाणाम्।
ईशीम्–ईशाङ् गार्ध हरां तां तनुमध्यां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईडे।।

प्रत्याहार–ध्यान–समाधि–स्थितिभाजां,
नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम्।
सत्य–ज्ञाना–नन्दमयीं तां तडित्–आभां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईडे।।

चन्द्रापीडा–नन्दितमन्द–स्मितवक्त्रां,
चन्द्रापीडा–लंकृत–लोला–लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्रा–द्यर्चित–पादाम्बुजयुग्मां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईडे।।

नाना कारैः शक्ति–कदम्बै–र्भुवनानि,
व्याप्त स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कल्याणीं तां कल्पलताम् आनतिभाजां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईडे।।

मूलाधारात्–उत्थित–वन्तीं विधिरन्ध्रं,
सौरं–चान्द्रं धाम विहाय ज्वलितागड़ीम्।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्–अभिवन्द्यां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईडे।।

आदि–क्षान्ताम्–अक्षर–मूर्त्या, विलसन्तीं,
भूते भूते भूत कदम्बं प्रसवित्रीम्।
शब्द ब्रह्मा–नन्द मयीं ताम्–अभिरामां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईडे।।

यस्याः कुक्षौ लीनम् अखण्डं, जगत्–अण्डं,
भूयो भूयः प्रादुर–अभूत–अक्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीम्,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईडे।।

यस्याम्–एतत्प्रोतम्–अशेषं मणिमाला,
सूत्रे यत्–वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
ताम्–अध्यात्म–ज्ञानपदव्या–गमनीयां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईडे।।

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः
साक्षी यस्याः सर्गविधौ सहंरणे च।
विश्वत्राण–क्रीडन शीलां शिवपत्नीं,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईडे।।

प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो,
भक्तया नित्यं जल्पति गोरीदशकं यः।
वाचां सिद्धिं सम्पतिम्–उच्चैः शिवभक्तिं,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईडे।।

अब कलश के सामने नवीद चढा कर पढें :-

ओम विष्णोयत पर्मम्पदम अरवेशनो पंचायतन देवता भयो नमाः, अभेंकरी देवये नमाः, खीम्करी भवानेम सर्व शत्रो धातनिये यह राष्ट्राधिपते, आनन्देश्वर भेरवाये, तिल मंडलमात्रम, वधी मधुमिश्रम ओम नमो नवीदयामे नमाः।

अब हाथ में तिल और फूल के साथ दक्षिणा डालें :-
देवाताभ्यः दक्षिणायै तिल-हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि।
एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।

कलश पर फूल डालते पढें :- उों तद्विष्णोः परम पदं सदापश्यन्ति-सूरयः दिवीव चक्षुर्-आततम्। तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पद्म।

अब हाथ जोड़ कर पढें :- ओम मंत्रहीनम क्रियाहीनम विधिहीन्म च यतगत्म तोयात, क्षिमिताम देवी कृपया परमैश्वरी।

दोनों हाथ में फूल लेते हुये प्रणाम करते हुए पढ़े :-
आपन्नोस्मि शरण्योस्मि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवन्-त्वां-प्रान्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्। उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा चोरसा मनसा व नमस्कारं करोमि नमः।
सर्वे भवन्तु सुखिना सर्वें सन्तु निरामया सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कच्चित् दुख भाग्भवेत्।

सुफल
कन्द
अखरोट
अखरोट
अखरोट
अखरोट
अखरोट
अखरोट
घी पात्र
प्रनीत पात्र
फूलों की थाली
सामग्री
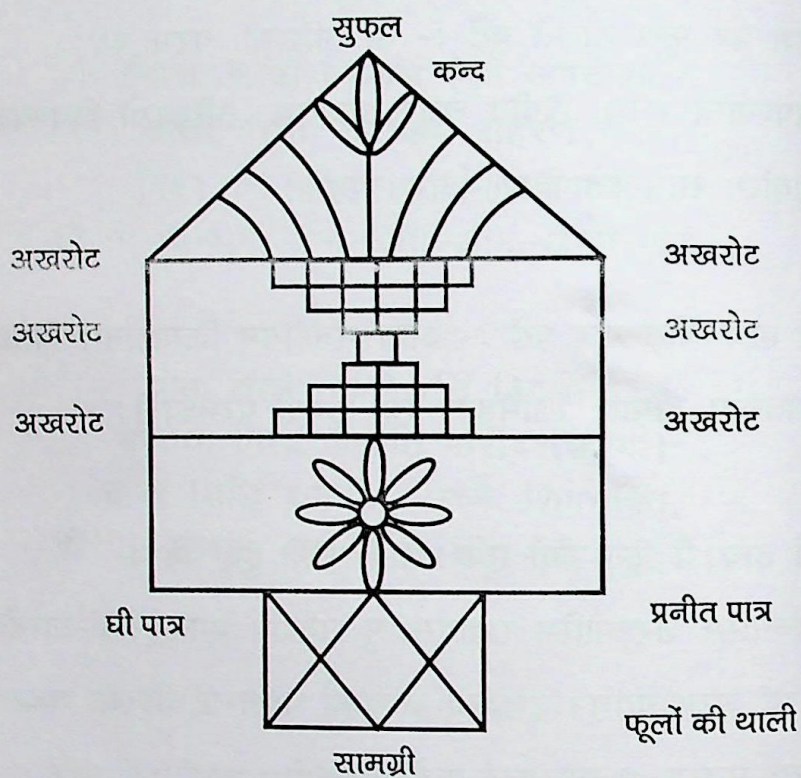
अब हवन कुंड के सामने अँत सुभाव में बैठ कर भगवान के प्रकाश मै सारूप में ध्यान लगा कर हाथ जोड़ कर पढें :- मंत्र का अर्थ है शाँति और स्कून देने वाले परमात्मा, खुशी और म्सरत देने वाले परमात्मा, चैन और महा आनन्द देने वाले, मैं, आपके महा प्रकाश मय सरूप को नमस्कार करता हूँ। मंत्र है :-

ऊँ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च, मयस्कारय च नमः शिवाय च, शिवतराय च।।

हाथ में तीन बार पानी ले कर मुख पर छिड़के -

ओम शनो देवी,रभिशटे आपो भवंतो,पतिये शन्यो,रभि सर्वन्तोहन

अब बायें हाथ पर पानी ले कर दायें हाथ की छोटी उंगली ओर मध्य उंगली से अपने दायें फिर बायें अंगों को छूयें :- मंत्र :-

ओम वाक वाक ओम प्राना प्राना

ओम च्खशू च्खशू-ओम श्रूत्रम-ओम नाभी, ओम हर्दयम, ओम कंठे-ओम श्रेस्ते,ओम बाहोभियाम,यशूबल्म और करत्ल करप्रेशठये

अब मंत्र के साथ दोनों हाथों की उंगलियों से अंगों को छू लें :-

ओम भूप्नातोशरसी — ओम भुवाः प्लाः तुपादियो
ओम सवातुकंटे — ओम महाप्लना तु हर्दे
ओम ज्नाः पुनाः तुनाभयाम — ओमत्पा प्नाः तुपादयो
ओमस्तेम पुनाःतु पुनः श्री — ओप खप ब्रह्म प्नाः तुसर्वत्र-

अब प्रानायाम करें-मंत्र यह हैः-

ओमभू ओमभ्वाः ओमस्वाहा ओममहा ओमजनाः ओम तपाः ओमस्तेम---तीन बार पढें :-

ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

अब फिर हाथ जोड कर अपने को ईश्वर को स्मर्पित कर के पढें:-

हे ईश्वर दयानंदे भव्त कृपया अनेनज्पू उपास्नादि कर्मदा धरेमार्थ काम मूखेश्नाम सेधि सीदेर भौइनह।

अब फिर हाथ जोड कर अपने को ईश्वर को स्मर्पित कर के पढें:-

हे ईश्वर दयानेदे भव्य कृपया अनेनज्पू उपास्नादि कर्मना धरमार्थ काम मूक्षनाम सेधि सीदेर भौइनह।

अब फिर हाथ जोड कर ईश्वर से प्रार्थना करें कि जगत दाता होने के नाते आप हमारी बुरी आदतों और दुखों को दूर कर के हमें अपने चरण कमलों में ले कर अच्छे काम,परोपकार के काम के लिऐ हमारे मन में श्रृद्धा उत्पन्न कर के अपनी शक्ति की ओर मौड दे।--

मंत्र यह है:-

ओम विश्वनी देवस्वित्र दुरतानिप्रासू यतभ्दर्म तनु आसूः।
अब तीन आच्मन करें ओर पढें:-

ओम अम्रतो प्सत्रन मसी स्वाहा ओम अम्रतापधान मसिसवाहा
ओमस्तेमयशि शरीरममि शरेह श्रेताम शस्वाहा।

(हवन कुंड में भी कलश बनाना है)
अब हवन कुंड में अग्नि जलाने के लिऐ कड़छी पर रत्नदीप की ज्योती से काफूर से जला कर इस मंत्र से अग्नि को चमकायें:-
ओम भूर भुवाः सोदेबुरो भूम्ना प्रथोयो, वर्मना त्सयास्ते प्रथ्वी
देवेज्नी प्रशठे अग्नि म्नादि म्नादया यादवहे।
ऊँ भूर्भवः स्वद्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्त्रा-दमन्नाद्यायदधे।।

ओम उदबुधे स्वागनी, प्रती, जाग्रही तुमिशटा प्रुते, स्मसर्जे थामेस च अस्मंत सूधस्ते, अधुयेत्रास्मिन, विशवे, दयवायजमान्शचि सेदित
अब अग्नि में तीन स्मधा धान के मंत्रो के बाद स्मद डालते जायें:-

१-ओम ऐत इधर आत्माजात वेदस्ते ने, धसयू, वर्ध सो चे ध वरुधयि चि अस्मान मुर्जया पशू भर ब्रह्म वुर्चसुपेना, नादैनसमय दुदि स्वाहा। ओम अगने जातवेद्से ओम न म्म।

२-ओम स्मधागनी दुयतधर्तम बोधत्या, तर्थम अस्मनहुया ज्होतन स्वाहा।

अदिमागने जातुवेदस्ते शुच्शे धर्तमत्योर्म ज्होतन अगनेजात वेदसे स्वाहा।

ईदम अगने जात्वेदस् इवन न

३-ओमत्लस्तो स्मध भ्रांगरो, ग्रतेन वर्दयाम्सी ब्रहछोचा, यूमिँठये स्वाहा इदम अगने न म्म।

अब अग्नि में घी की पाँच आहोतियाँ दें :-

ऊँ अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।।

इदमग्नये जातवेदसे-इदन्न मम ।१।

अब अग्नि के बाहर जल डालते पढें :- (पूरब की तरफ) ओम अदिते अनूमीन स्वा (पछिम की तरफ)-ओम अनुम्ते अनुमीन स्वा (उतर की तरफ)

ओम सरसोतीये अनुमीन स्वा

अब चारों और जल डालें :-

ऊँ देव सवित: प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।

दिव्यो गन्धर्व: केतपू: केतं न: पुनातु

वाचस्पतिर्वाच न: स्वदतु ।।४।।

अब अग्नि के उतर में घी की आहिती दें:-मंत्र यह है :----

ओम अगने स्वाहा, एदम अगने एदम न म्म।

अब दक्षन की तरफ घी डाले :-मंत्र यह है ----

ओम सूमाये स्वाहा, एदम सूमाये एदम न म्म।

अब अगनी के बीच में दो आहोतियाँ डालें ---मत्र यह है:-

ओम प्रजापते स्वाहा, एदम प्रजापते एदम न म्म। ओम इंद्राये स्वाहा एदम इंद्राये एदम न म्म।

नोट :- हर काम को करने से पहले श्री गणेश के नाम का जाप माता पारवती के वरदान के फलस्वरुप किया जाता है। इसलिए हम भी इसी के नाम के सुमर्ण की एक माला का यज्ञ करेंगे।

अपने दोनों हाथ में फूल कर नमस्कार करते पढें: ओम असे श्री महा गणेपते मंत्रीन, बह्म ऋषि गायत्रम छंध महा गणपते देवता,

गम्बीज्म गलूम शक्तिया नमाः केल्कम, आत्मनो। एहिलोके सुख प्राप्तम, परलोके मुक्ति प्राप्तम, पुत्र पुत्रादि सुख प्राप्तम, शरीर पीढा निवार नार्थम, सर्वे विशे शांती प्राप्तम। आयू आरोगे ईश्वरेम प्राप्तम। सुतानाम, आयो ऐशुरयि आरोगि वेधया प्राप्तम। आत्मनाः जीवागरे सरस्वति प्राप्तम, महा गणप्ते पाठे विनियोगा।

मूल मंत्र :- ओम गलोम गं गणपते नमाः (तीन बार पढें)

श्री गनेश जी की जप माला का यह, होम, शुरू करने से पहले इस कशमीरी आराधना के चार चार मिसरे हर, ५४ नामों की आहोतियाँ देने से पहले शांती से भक्ति भाव से गणपति बाबा को समर्पित करते रहें - ओम नमो नमो गजन्दराये ईकदन्त दरायच नमाः ईश्वर पुत्राये श्री गणेशाये नमो नमाः---

आसै शर्न कर तम दया — ओम श्री गणेशाये नमाः
गणपत गनेश्वर ही प्रभू — कलि राज राजन हंदि विभू
पजि लोल पाद तल पमा — ओम श्री गणेशाये नमाः
गोडनियुक च छूी आधिकार — कलि काल कुई छुक ताज्दार
पजि प्रेम चरन क्मलन तल पमा — ओम श्री गणेशाये नमाः

मोश्क च वाहण शूबवुन त्रन भवत्र मंज फेर बुन
स्हायतस म रोजतम हर दमा ओम श्री गणेशाये नमाः
यज्ञनस जप्स वेवहारसय गोडनी सोरान पर्थ कारसय
कारस अनान छुख च ज्माः ओम श्री गणेशाये नमाः

पुश्प अर्चना करने हेतू इस शलोक को पढें, फिर हर नाम के अंत में नमाः कह कर भगवान को फूल चढायें----

शलोक ओम ना ना सुधंदित पुशपानि यथा कालोद वभवानि च -पुश्प अंजली म्यादतो ग्रहान श्री गनेश्वरो--

अब गणपती स्वाहकार

१- ओम गणेशाय नमाः/स्वाहा २-ओम गन क्रीढाय नमाः/स्वाहा
३- ओम गन नाथाय नमाः/स्वाहा ४-ओम गज्ननाय नमाः/स्वाहा
५- ओम विकर्तुडाय नमाः/स्वाहा ६-ओम महोदराय नमाः/स्वाहा
७- ओम लम्बूधराय नमाः/स्वाहा ८-ओम गनादि पाये नमाः/स्वाहा
९- ओम गजि विकत्राये नमाः/स्वाहा १०-ओम धूमर्वरनाये नमाः/स्वाहा
११- ओम विधन राजाये नमाः/स्वाहा १२-ओम भिम मुखाये नमाः/स्वाहा
१३-ओम सुमुखाये नमाः/स्वाहा १४-ओम दुर मुखाये नमाः/स्वाहा
१५-ओम प्रमोदाये नमाः/स्वाहा १६-ओम हीरभाये नमाः/स्वाहा

१७-ओम शाम्भराये नमा:/स्वाहा १८-ओम शम्भिये नमा:/स्वाहा

१९-ओम लुम्भ करनाये नमा:/स्वाहा २०-ओम महाबालाये नमा:/स्वाहा

२१-ओम नंदनाये नमा:/स्वाहा २२-ओम भाल चंदराये नमा:/स्वाहा

२३-ओम भाल गनपते नमा:/स्वाहा २४-ओम भूप्तीये नमा:/स्वाहा

२५-ओम बूधिनाथाये नमा:/स्वाहा २६-ओम बुधि प्रयाये नमा:/स्वाहा

२७-ओम बुधिविधताये स्वाहा २८-ओम भून्प्तये नमा:/स्वाहा

२९-ओम अल्मपटाये स्वाहा ३०-ओम अम्ताये नमा:/स्वाहा

३१-ओम मैघ नादाये स्वाहा ३२-ओम विनायकाये नमा:/स्वाहा

३३-ओम धीराये स्वाहा ३४-ओम शुरवीराये नमा:/स्वाहा

३५-ओम वरप्रदाये स्वाहा ३६-ओम रूदरप्रदाये नमा:/स्वाहा

३७-ओम उमा पुत्राये नमा:/स्वाहा ३८-ओम कुमाराये नमा:/स्वाहा

३९-ओम गुरूविये नमा:/स्वाहा ४०-ओम ईसान्पुत्राये नमा:/स्वाहा

४१-ओम मोश्कवाहनाये नमा:/स्वाहा ४२-ओम सिधी प्रयाये नमा:/स्वाहा

४३-सिधप्तये नमा:/स्वाहा ४४-ओम सिध विनायकाये नमा:/स्वाहा

४५-ओम सिधये नमा:/स्वाहा ४६-ओम मोहनौ प्रयाये नमा:/स्वाहा

४७-ओम जयाये नमा:/स्वाहा ४८-ओम वेशनो कर्ताये नमा:/स्वाहा

४९-ओम वेशनोरूफाये नमा:/स्वाहा ५०-ओम निधीये नमा:/स्वाहा

५१-ओम कविये नमा:/स्वाहा ५२-ओम ब्रह्मन्ये नमा:/स्वाहा

५३-ओम पोशिदन्त भ्सताये नमा:/स्वाहा ५४-ओम मुक्ती दाताये नमा:/स्वाहा

सौंदर लम्बूधर ईक दंत सुम्रन चॉन्य वॉतिम मे अंद
रूत वेल सुंदर छुम स्माः ओम श्रीं गणेशाये नमाः
सुम्रण छि यिम चॉन्यी करा़न भौसाग्रस अपोर तरान
रठ सानि नावे ची न्माः ओम श्री गणेशाये नमाः
जगतुक महीश्वर च पिता स्ति रूप स्ति धर्मच स्ताः
माता चे गौरी श्री उमा ओम श्री गणेशाये नमाः
बाह नाव चे सुंदर शुबवन्य सौरगस गछान तिम लूभ वन्य
पूर्न करूम च मनि कामना औम श्री गणेशाये नमाः

५५-ओम सर्वनेत्राधि वासाये नमाः/स्वाहा ५६-ओम नादप्रतिशठाये नमाः/स्वाहा

५७-ओम पीतांबराये नमाः/स्वाहा ५८-ओम चतुरभूजाये नमाः/स्वाहा

५९-ओम पोर्शाये नमाः/स्वाहा ६०-ओम देव देवाये नमाः/स्वाहा

६१-ओम तंब्जाये नमाः/स्वाहा ६२-ओम देवत्रायते नमाः/स्वाहा

६३-ओम शंभो तेजाये नमाः/स्वाहा ६४-ओम शिवासुक हाराये नमाः/स्वाहा

६५-ओम गौरी तेजभूमये नमाः/स्वाहा ६६-ओम यज्ञ कामाये नमाः/स्वाहा

६७-ओम महानादाये नमाः/स्वाहा ६८-ओम शुभात्राये नमाः/स्वाहा

६९-ओम सर्वात्माये नमाः/स्वाहा ७०-ओम सर्वदिवात्माये नमाः/स्वाहा

७१-ओम मीरोप्रतिशठाये नमाः/स्वाहा ७२-ओम स्रेश्टी लिंगये नमाः/स्वाहा

७३-ओम प्रताप्ये नमाः/स्वाहा ७४-ओम भलीये नमाः/स्वाहा

७५-ओम यशौम्ये नमाः/स्वाहा ७६-ओम धार्मकाये नमाः/स्वाहा

७७-ओम पर्थमाये नमाः/स्वाहा ७८-ओम प्रथ्मईश्वराये नमाः/स्वाहा

७९-ओम सीूल कोखये नमाः/स्वाहा ८०-ओम लंभू कन्ठोये नमाः/स्वाहा

८१-ओम रक्तोये नमाः/स्वाहा ८२-ओम रख्तांभर धराये नमाः/स्वाहा

८३-ओम रक्तकरूये नमाः/स्वाहा ८४-ओम शवेत्त्वांभर बीज्ताये नमाः/स्वाहा

८५-ओम सम्पूरनाये नमाः/स्वाहा ८६-ओम सर्व मंगल मंगलाये नमाः/स्वाहा

८७-ओम सर्वकार्न कारेम्ये नमाः/स्वाहा ८८-ओम गदाधराये नमाः/स्वाहा

८९-ओम शूलिये नमाः/स्वाहा ९०-ओम चक्रपानिये नमाः/स्वाहा

९१-ओम अख्शमाला धराये नमाः/स्वाहा ९२-ओम पूर्नपात्राये नमाः/स्वाहा

९३-ओम कम्योधुर्वे नमाः/स्वाहा ९४-ओम म्ळज्ञ लक्षमी प्रतिमाये नमाः/स्वाहा

९५-ओम सिधलक्षमी मनुर्माये नमाः/स्वाहा ९६-ओम सुख्माये नमाः/स्वाहा

९७-ओम भोगदानिये नमाः/स्वाहा ९८-ओम महाशंखाये नमाः/स्वाहा

९९-ओम नधी प्रभूये नमाः/स्वाहा १००-ओम क्रयाश्कतिये नमाः/स्वाहा

१०१-ओम ज्ञान शक्तिये नमाः/स्वाहा १०२-ओम इछाश्कतिये नमाः/स्वाहा

१०३-ओम ओंकाराये नमाः/स्वाहा १०४-ओम ओम्कार वाच्ये नमाः/स्वाहा

१०५-ओम आशापूरिकाये नमाः/स्वाहा १०६-ओम निर्मलाये नमाः/स्वाहा

१०७-ओम इंद्रगोप्समानये नमाः/स्वाहा १०८-ओम कर्मा कर्मफल प्रदाये नमाः/स्वाहा

ऊँ तेजोसि, शुक्रमसि ज्योतिर्‌सि धामासि ।

ओम सर्व सिधि दात्रे नमाः/स्वाहा

आमत्य भॅखित्य छी चे चरण पेमत्य खारन तल छ परण

दर दिथ मे कास्तम दिलुक घमाः ओम श्री गणेशाये नमाः

गनिशि बल प्यठ आख चॅलिथय अंग अंग सेन्दरा मॅलिथय

गोड बोज च मयॉनी प्रार्थना ओम श्री गणेशाये नमाः

सुमर्न करान चॉन्य भॅखत्य जन पूर्ण करान तिमनय च प्रन

चर्नामरेथ चोनुय चेमा ओम श्री गणेशाये नमाः

अब हाथ में फूल लेकर गणेश की मूरती पर इस शलोक को पढ कर फूल डालें:-

शिव शक्ति सांखयि योग शुध वादी कैरतुव।
देव शत्रो दुयत नाश ज्शनो विगन कैरतुत।।
भक्तिवर्ग पाप नाश बुध बुधी चिन्तित।
क्लप वरक्ष दान दख्श भक्ति रखयि रखेमाम।।

अब शुध पानी का गिलास हाथ मे लेकर दायें हाथ की उंगलियों से थाली में नीचे लिखे शलोक के पढने के बाद हाथ पर बचा पानी वापस गिलास में डाल कर इस पानी की छीटें अपने मुख पर मारें।

शलोक:-

ओम शनो देवी अभेश्ट आपोभवन्तो पीतये, शनयोाभि सर्वन्तोनाः

इती श्री महा गणेश, एक माला नामावली होम/पुष्पार्चना माला सम्पूर्णम।

अश्टादश सलोकी गीता जी/ और-महा गायत्री महा मंत्र का:-

।। भास्कराय एक माला होम ।।
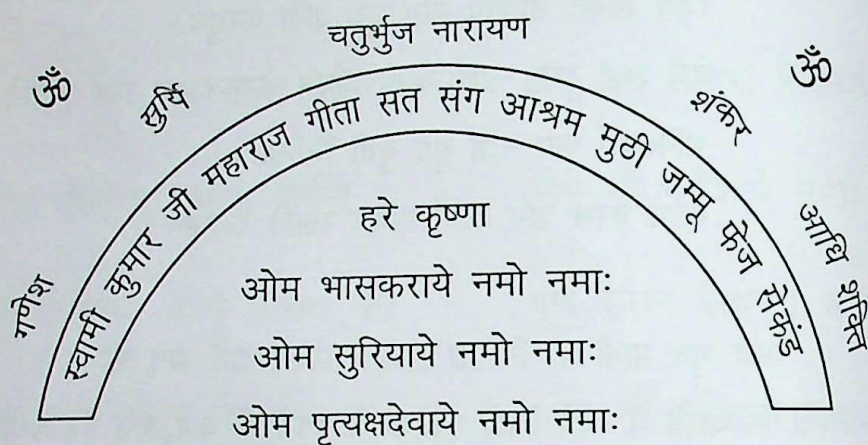
सूर्य देवता की एक माला का होम

या

सूर्य देवता की एक माला की पुष्पार्चना

सुर्य भगवान की एक माला का होम या पुष्पार्चना करने से पहले श्रद्धा से नमस्कार करे।---------------------

१) हा पान सुलि वॉथ गछ हुश्यार
सुर्य भगवानस कर नमस्कार
मारतंड नाथस कर नमस्कार
२) सृष्टि हुंद छुय यि चोन स्वरुप
पर्थ जीवस मन्ज छ सुरियि सन्ज जोत
सुर्य बगैर जीवन छु अंदकार
हा पान सुलि वॉथ गछ हुश्यार
३) सुर्य भगवान छुय जगत आत्मा
सुर्य देव जानुन छु प्राणाधार
४) सूर्य भगवान छुय प्रत्यक्ष देवता
पूजा करतस च सायम प्रातः
चमकान क्या छुय यि मंडलाकार
हा पान सुलि वॉथ गछ हुश्यार

५) परम ब्रह्मा पर्मात्मा छु परि पूरण

अथ मंज बॅसिथ छि त्रेनवै कार्न

पंच महा बूतन हुंद छु सरदार

६) सुर्य देवस छुय काल ऑदीन

कुनि आस्न ताफ कुनि आस्न शीन

अख चक्र रथ छुस क्याह चम्कदार

७) सथ गुर्य ल्मान सुर्य सन्दिस रथस

लाल पम्पोश शूबान छुस मंज अथस

सुर्यि देवता हावान कम चम्तकार

८) मार्तडस मंज छ सिरिय सुन्द सीन

पेत्रन ति वातन तति पिंढ दान

९ आधि देव प्रभाकर चे जे भॅविनै

रूगन त पापन करान छुख खय

अंदकारस च छुख करान लार

१०) द्वारिका साम्बरान भाव प्मपोश

नथ प्रभातन पूजि लागा छुय

डंडवत करान छुय सु बारम्बार

हा पान सुलि वाथ गछ हुश्यार

पुष्पार्चना की सूरत में इस शलोक का उच्चारर्ण कर के मन में सूर्य देव का ध्यान कर के हाथ के फूल अर्पित करें:-

ओम नाना सुगंदित पुश्पानि यथाकालोद सुर्याय

पुश्पांजली म्यादितो ग्रहानि प्रथम देवताये

अब गायत्री मंत्र उचारन करके तीन बार सूर्य देव को फूल अर्पित करें

ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्।।

एक बार फिर फूल अर्पित करें

श्री देव उवाच, श्रनो देवी, प्रदख्यामः सूरियी नाम शताशटकं यिसतुपाठी मात्रेन सर्वेन्शीन चामयाः तरपन करते पढें

ओम असि श्री सूर्य ईक माला, नाम मन्त्रेस्य ब्रह्मा, ऋ्टी, गायत्रे छनदः, सुर्य देवताह, राम बीज्म, श्रेमसुखत्याः, साःकेलकम, आत्मनो वांगम्ताः कायो, पार्जता पाप निवार्नाथं, होम पुश्पार्चना वन्ये योगाः।

नीचे तीन मन्त्र के अन्त में तीन फूल स्वाहा-नमाः कर के चढायें।

१-भास्कराये विदमहे स्वाहा/नमाः।शतनाम ईकमाला नामाये दहीमुह स्वाहा/नमाः तना सुरियि प्रचोदयात स्वाहा/नमाः

२-भास्कराये विदमहे शतनाम ईकमाला नामाये दहीमुह स्वाहा/नमाः तना सुरियि प्रचोदयात स्वाहा/नमाः

३-भास्कराये विदमहे स्वाहा शतनाम ईकमाला नामाये धी महि धयोयूना प्रचोदयात स्वाहा/नमाः

अब सूर्य देवता के १०८ नामों की एक माला का, होम/पुष्पार्चना शुरू है:

१- ओम ह्राम ह्रींम साः सूर्याय नमाः/स्वाहा

२-ओम सर्वलोकेशाये नमाः/स्वाहा

३-ओम सृष्टि करतरे नमाः/स्वाहा

४-ओम सर्शटी हरतरे नमाः/स्वाहा

५-ओम आदत्याये नमाः/स्वाहा

६-ओम दुर्पदाये नमाः/स्वाहा

७-ओम वेराये नमाः/स्वाहा

८-ओम पोर्शाये नमाः/स्वाहा

९-ओम पर्म ब्रहम्ने सुर्याये नमाः/स्वाहा

१०-ओम परमात्मने सयर्याये नमाः/स्वाहा

११-ओम कामिने सुर्याये नमाः/स्वाहा

१२-ओम यूग्ने सुर्याये नमाः/स्वाहा

१३-ओम महा बुधिये नमाः/स्वाहा

१४-ओम प्रजाप्ते सुर्याये नमाः/स्वाहा

१५-ओम सातिवेकाये नमाः/स्वाहा

१६-ओम राज्साये नमाः/स्वाहा

१७-ओम ताम्साये नमाः/स्वाहा

१८-ओम ईश्वराये नमाः/स्वाहा

१९-ओम निर्गुनाये नमाः/स्वाहा

२०-ओम कालकर्तये नमाः/स्वाहा

२१-ओम कालाये नमाः/स्वाहा

२२-ओम कृष्णाये नमाः/स्वाहा

२३-ओम दूरदुर्शाये नमाः/स्वाहा

२४-ओम सुदर्शनाये नमाः/स्वाहा

२५-ओम धीराये नमाः/स्वाहा

२६-ओम दशिबहवे नमाः/स्वाहा

२७-ओम वैशनवे नमाः/स्वाहा

२८-ओम निर्मायाये नमाः/स्वाहा

२९-ओम ज्टलाये नमाः/स्वाहा

३०-ओम भानवे नमाः/स्वाहा

३१-ओम धात्रे नमाः/स्वाहा

३२-ओम विधा४ नमाः/स्वाहा

३३-ओम मारतंडये नमाः/स्वाहा

३४-ओम रुदराये नमाः/स्वाहा

३५-ओम भदर्प्रदाये नमाः/स्वाहा

३६-ओम प्रभूये नमाः/स्वाहा

३७-ओम शांताये नमाः/स्वाहा

३८-ओम शंकराये नमाः/स्वाहा

३९-ओम कम्लासनाये नमाः/स्वाहा

४०-ओम सुरेशाये नमाः/स्वाहा

४१-ओम दोताये नमाः/स्वाहा

४२-ओम महा मुहहाराये नमाः/स्वाहा

४३-ओम भक्तवत्सलाये नमाः/स्वाहा

४४-ओम साम्गाये नमाः/स्वाहा

४५-ओम त्रजटाये नमाः/स्वाहा

४६-ओम काल यूगने नमाः/स्वाहा

४७-ओम महानादाये नमाः/स्वाहा

४८-ओम महामायाये नमाः/स्वाहा

४९-ओम विज्याये नमाः/स्वाहा

५०-ओम ज्वालाये नमाः/स्वाहा

५१-ओम तेजूम्याये नमाः/स्वाहा

५२-ओम हीमाये नमाः/स्वाहा

५३-ओम हीमक्रयाये नमाः/स्वाहा

५४-ओम इंगलाये नमाः/स्वाहा

५५-ओम विनायकाये नमाः/स्वाहा

५६-ओम भासासे नमाः/स्वाहा

५७-ओम बालरुपाये नमाः/स्वाहा

५८-ओम गौम्तीपतिये नमाः/स्वाहा

५९-ओम गंगाधराये नमाः/स्वाहा

६०-ओम गणेश्वराये नमाः/स्वाहा

६१-ओम सतीप्रयाये नमाः/स्वाहा

६२-ओम सतितात्मकाये नमाः/स्वाहा

६३-ओम सतिधराये नमाः/स्वाहा

६४-ओम मुक्ताये नमाः/स्वाहा

६५-ओम मुक्तिाये नमाः/स्वाहा

६६-ओम मुक्तिदाये नमाः/स्वाहा

६७-ओम प्राणईशाये नमाः/स्वाहा

६८-ओम व्यानाये नमाः/स्वाहा

६९-ओम उमानाये नमाः/स्वाहा

७०-ओम स्मानाये नमाः/स्वाहा

७१-ओम उदानरुप्वतये नमाः/स्वाहा

७२-ओम पखयाये नमाः/स्वाहा

७३-ओम मासाये नमाः/स्वाहा

शलोकः-

१-यन मंडल्म देवगुने सुपुज्तम ब्रह्मऋषि देवऋषि नर्पऋषि भावित्म त्म देव देवम प्रन्मामि सुर्य पुनातो माम तत सवितुरुवर्नेम।

२-यन मंडल्म देवगुने ज्ञानगुन्स तुग्मेम त्रेलूकि पूज्तम त्रगुनात्मः रुप्म स्मसत तेजोमय देवयिरूप्स पुनातो माम तत सवितुरुवर्नेम।

३-यन मंडल्म गूढम अतिप्रभूधम धर्मसे दुर्धम कोरुते ज्नानाम यतसर्वू पापखियिस कार्नम च पुनातो माम तत सवितुरुवर्नेम।

७४-ओम वरशाये नमाः/स्वाहा

७५-ओम यज्ञरुपाये नमाः/स्वाहा

७६-ओम कृत्तये नमाः/स्वाहा

७७-ओम तृत्यायुगाये नमाः/स्वाहा

७८-ओम द्वापरयुगाये नमाः/स्वाहा

७६-ओम कलयुगाये नमाः/स्वाहा

८०-ओम अग्नये नमाः/स्वाहा

८१-ओम यमाये नमाः/स्वाहा

८२-ओम वरुणाये नमाः/स्वाहा

८३-ओम कल्पांत कालागने नमाः/स्वाहा

८४-ओम आकाश नधीरूपाये नमाः/स्वाहा

८५-ओम बालिका वोल्भाये नमाः/स्वाहा

८६-ओम वरुदाये नमाः/स्वाहा

८७-ओम विरयिदाये नमाः/स्वाहा

८८-ओम वदरम्यायें नमाः/स्वाहा

८९-ओम तुलसी सेवियाये नमाः/स्वाहा

९०-ओम तोश्टाये नमाः/स्वाहा

९१-ओम सूर्याये नमाः/स्वाहा

९२-ओम सुर्यबिन्दवे नमाः/स्वाहा

९३-ओम हाला सूर्याये नमाः/स्वाहा

९४-ओम होम सूर्याये नमाः/स्वाहा

९५-ओम होत सूर्याये नमाः/स्वाहा

९६-ओम हरी सूर्याये नमाः/स्वाहा

९७-ओम ह्राम सूर्याबीजाये नमाः/स्वाहा

९८-ओम हरीम सूर्याये नमाः/स्वाहा

९९-ओम क्षमापती सूर्याये नमाः/स्वाहा

१००-ओम आकार सूर्याये नमाः/स्वाहा

१०१-ओम सर्व सूर्याये नमाः/स्वाहा

१०२-ओम भूसूर्याये नमाः/स्वाहा

१०३-ओम भवाः सूर्याये नमाः/स्वाहा

१०४-ओम स्वाः सुर्याये नमाः/स्वाहा

१०५-ओम धर्म सुर्याये नमाः/स्वाहा

१०६-ओम कर्म सूर्याये नमाः/स्वाहा

१०७-ओम वेशो सूर्याये नमाः/स्वाहा

१०८-ओम भक्ति मुकति लक्षमी सूर्याये नमाः/स्वाहा

ऊँ तेजोसि, शुक्रमसि ज्योतिर्सि धामासि l

ओम सर्वज्ञान सोरूपाये नमा:/स्वाहा

अब अग्नि में फूल डाल कर पढें :-

या पठेत प्राव्रा उत्था भक्तियानाम सुर्य माला एदम त्राः सर्वम आयू तथा आरोग्यम लभते मोखेम आयो च आदत्सये न्मस्कार्म यर कुर्वन्ती दिने दिने ज्नमांत्र सहसत्रेशू दार्दर्म न जायते न्मो धर्मनिधनाये नमाः सुक्रिति सस्श्ने नमाः प्रतेक्षशि देवाये भास्कराये न्मो नमाः अवदयन तुमहाभानवा तेज्सा च अभयंकर सप्त अशटमी दिप्तशुवा तुादत्याः प्रैताम म्मः

अन्त पर तर्पन करें :- अनेनि श्री सुर्य माला नाम स्वाहाकार होमीनःभगवान हराम हरेम स्वाः सुर्य सप्तशिवा अन्शवा ईकाशवा प्रतेक्ष देवा पर्मार्थ सारा तेज्रुरूपा प्रभास्हतया आदतियाः प्रेयताम प्ररेयता अस्तो।

ऊँ शन्नो देवीर्-अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये l

शंयोर्-अभिस्रवन्तु न: l

हाथ पर पड़ा पानी वापस गिलास में डाल कर :- पानी मुख पर डालें।

।। श्री भगवान कृष्ण की एक माला का होम या पुष्पार्चना ।।

।। श्री भगवान कृष्ण की एक माला होम ।।

ओम नमो भगवते वासदेवाये

ओम श्री कृष्णाय नमो नमाः

ओम कलीम कृष्णाये नमो नमाः

श्री भगवान कृष्ण की माला का होम

या श्री भगवान कृष्ण की एक माला की पुष्पार्चना

अगर आप पुष्पार्चना करना चाहते हैं तो पहले इस शलोक का उच्चारण करना न भूलना फिर शलोक के अन्त पर नमाः के फूल अर्पित करते रहना–

शलोकः–

ओम नाना सुगंधित पुशपानि यथा कालोद भवानि च।
पुशपांजली मयादतो ग्रहानि च पर्म ज्ञानेश्वरो।।

भजन

अगर पर्मार्थ च सरनुर छुय पजिय परन्य च गीता जी
यह गीता ज्ञान छु ॲछ मुचरावान वछस ज्ञानच जतिन्य त्रावान
मिटावान मल हटावान अज्ञान पजी परनुय च गीता ज्ञान
गट कासान यि अन्धकारच करान सन्कट यि सॉरिय दूर
दिवान भर पूर धर्मुक ज्ञान पजी परनुय च गीता ज्ञान

सिरिय ज्ञानच छि गीता जी छु जग्तुक रहसयि ॲथ्य अन्दरय
पजी धर्मच छि वथ हावान पजी परनुय च गीता ज्ञान
दिवान धर्मुक असि यि ज्ञान छ कर्तविच कछन असि जान
यवान रस रस ज्ञान पजी परनुय च गीता ज्ञान
छ काम करूदस करान असि नाश अमे नाशे यवान प्रकाश
वचार शख्ती छु असि बढरावान पजी परनुय च गीता ज्ञान
मिटावान मोह सम्सारुक हटावा भै जेन मरनुक
दिवान असि ज्ञान चलान अभिमान पजी परनुय च गीता ज्ञान
छु देदौ मन्ज द्रामुत यि ज्ञान अम्युक प्रसाद छु सेठा महान
करान सॉरिय अम्युक गुन गाान पजी परनुय चॅ गीता ज्ञान

✡ ✡ ✡ ✡

अब हर शलोक के अन्त पर नमाः नमाः करते फूल अर्पित करते जाना

✡ ✡ ✡ ✡

धृतराष्ट्र ने संजय से पूछा हे संजय :-

1/1 शलोक :- धर्मक्षेत्रे कुरूक्षैत्रे समवेता युयुत्सवः

मामकाः पाण्डवाश्चैच्व किमकुर्वत संजय ।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

संजय ने जवाब दिया : राजन ओर क्या कहूँ

यत्र योगीश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजियो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिमर्म।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

।। अष्टादश श्लोकी गीता ।।

1/31 शलोक :- निमित्तानि च पश्यामि-विपरीतानि केशव,

न च श्रेयो-नुपश्यामि हत्वा स्वजनम्- आहवे ।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 2/48 :- योगस्थः कर्माणि संगं त्यकत्वा धनजय।

सिध्दय-सिध्द्-योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 3 / 6 :- कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।

इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 4 / 39 :- श्रद्धावान्-लभते ज्ञानं तत्-परः संयतेन्द्रियः

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिम्-अचिरेणाधिगच्छति।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 5 / 28 : यतेन्द्रिय मनो बुध्दि-मुनि-मोक्ष-परायणः।

विगतेच्छा-भय-क्रोधो यः सदा मुक्त एव सः।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 6 / 27 :- युक्ताहार विहारसे युक्त चेशटस्य कुर्मसु

युक्त-स्वाप्ना-व बोधस्य योगी भवति दूखःहा।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 7 / 14 :- दैवी होषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम्-एतां-तरन्ति ते।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 8 / 24 :- अग्निर्-ज्योतिर्-अहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्।

तत्रो प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 6 / 30 :- अपि चेत्-सुदुराचारो भेजते माम-अनन्यभाक्।

साधुर्-एव स मन्तव्यः सम्यक्-व्यव-सितोहि सः।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

श्रीमदभगवत गीता जी हुन्द महात्मः-

पनन्य किन्य युस परुश जन यछि प्रेम सान

यि गीता शासत्र नेति छु परान

भयौ शूकौ दोखौ निशि सांपिथ मुक्त

त्मिस सपदान वेशनो बद छु प्राप्त

सनुन गीतायि प्राणायाम करि पूर

गछन नस परू जन्मक्य पाप पुल दूर

परुश जल सत्य युस रोजान करि श्रान

तमिस संसार मल छुय दूर सपदान

करन सत्य शासत्रन हुन्द बेयि चिन्तन

छु वान्मुत केन्ह न केन्ह छूय लाभ स्पदान

परन्य बस गीता छि लॉजिम त बेयि रुत

पदमनाभ कृष्ण सुन्द मोख कमल द्रामुत

यि गीता रुप गंगोदक छू प्रापथ

महाभारत पुरानुक सार अमरथ

सु युस भगवान वेशनो सन्दि माख द्राव

यि चेथ स्पदान पुनर जन्मुक छु आभाव

छि मिसलि गाव सॉरिय उपनेशद

त श्री गीता छय सरेश्ठ अम्रेत ॲमिस दोध

ॲमिस बोछ तेज फूहम छुय चेन वोल

श्री कृष्ण चंदरनि मोख कमल युस द्राव

अकुय शासत्र प्रसिध गीता यमयुक नाव

कुनुय छुय देवता श्री कृष्ण देवकी जाव

अकुय छुय मंत्र तसुन्द कुल नाम व ऐदाद

तमिस श्री कृष्ण चंदरन्य करन्य सीवा

छु वान्मुत बस दह अकुल करतवि करना

ओम नमो भगवते वासदेवाये ओम श्री कृष्णाये नमो नमाः

ओम श्री कृष्णाये नमो नमाः ओम श्री कृष्णाये नमो नमाः

गायत्रे मंत्र ऊँ भूर्भुवाः स्वाः त्त सवितुर वर नियम भर्गू देवसि

धीमहि धियोयूना प्रचोदयात स्वाहा /नमाः

शलोक 10 / 3:- यो माम्-अजम-अनादिम्-च वेति-लोक महेश्वरम्।

असम्मढ स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 11 / 55 :- मत्कर्म कृत-मत्परमो मत्-भक्तः सघं-वर्जितः।

निर्वेरः, सर्व-भूतेषु यः स मामेति पाण्डव।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 12 / 12 :- श्रेयो हि ज्ञानम-अभ्यासात, ज्ञानात्-ध्यानं विशिष्यते।
धयानात्-कर्म-पलत्याग, स्त्यागात-शान्तिर-अनन्तरम्।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 13 / 3 :- क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्व-क्षेत्रेषु भारत।
क्षेत्र-क्षेत्र-ज्ञयोर्ज्ञानं तत-यत-ज्ञानं मतं मम।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 14 / 16 :- मां च यो-व्यभिचारेण: भक्तियोगेन-सेवते
स गुणान-सम-अतीत्य-तान-ब्रह्म-भूयाय कल्पते

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 15 / 15 :- निर्मानमोहा जितसंग-दोषा अध्यात्म-नित्या विनि-वृत्तकामाः।

द्वन्द्वै-र्विमुक्ताः सुख दुःख संज्ञैर्गच्छन्त्य मूढाः पदम-अव्ययं तत्।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 13 / 23 :- यः शास्त्र-विधिम-उत्सृज्य वर्तते कामः कारतः।

न स सिद्धम-अवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 17 / 16 :- मनः प्रसाद सौम्यत्वं मौनम-आत्म-विनिग्रह।

भाव-संशुद्धिर-इत्येतत-तपो मानसम उच्यते।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 18 / 66 :- सर्व-धर्मान-परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वां सर्व-पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शलोक 18/78 :- यत्र योगश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजवो भूतिध्रुर्वा नीतिर्मतिमर्म।।

गायत्रे मंत्र :- ओ३म भूर भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

✡ ✡ ✡ ✡
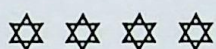
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

भजन

ओम नमू भगवते वासदेवाये ओम श्री कृष्णाये नमू नमाः
हरे कृष्ण सुंद नाप युस जेवि पेठ खारे तस कति मारे यम तय काल
जेवि पेठ ख़ारे मन्स मंज गारे तस कति मारे यम तय काल
ओम नमू भगवते वासदेवाये ओम श्री कृष्णाये नमू नमाः
प्रभात सम्यस दयि नाव युस हा सारे सुय न मरि यथ सम्सारस
अंतस सुय खसि वेमानच स्वारे तस कति मारे यम तय काल

निशकाम कर्म युस यति पंजनावे सुय कर्म तरिस भवसागर्स

तमि कर्म सत्यन बेयन ति तारे तस कति मारे यम तय काल

गीता मातायि लोला युस हा भरे सुय करि पानस सत्य इन्साफ

राधाकृष्ण खारेस पननि सवारे तस कति मारे यम तय काल

सतग्वरस पननिस युस यति पंज नावे सुय ग्वर मकलावेस कर खुरि निश

यमराज तमिस न बेयि जाँह यति पोरे तस कति मारे यम तय काल

राधाकृष्ण छुय पानय भगवान सॉरिय ॲम्य संज गीता छि ल्लवान

सारनय तारे पननि अन्वारे तस कति मारे यम तय काल

कुमार जियस टाठच पनन्य पत दोरान कुमार जी छुख कृष्णस हवाल करान

सॉरिय कृष्णस खसव अटबारे तस कति मारे यम तय काल

✡ ✡ ✡ ✡

ओम नमो भगवते वासदेवाये ओम श्री कृष्णाये नमू नमाः

ओम श्री कृष्णाये नमू नमाः

विश्वास रखो जो कोई श्रद्धा ओर भक्ति के साथ भगवान श्री कृष्ण के एक सौ आठ नाम की माला का जाप हर दिन करता है उसके सारे कलेश दूर होते है। हम सब मिल कर इस अन्मोल माला जाप होम के रूप में स्वाहा स्वाहा कर के करेंगे मगर पहले गीता जी के इस अठारवें (१८) अध्याय के शलोक ६६ को मन में उतारें:-

सर्वधरमान्परित्यज्य मामेकं सरणं व्रझ।

अहं त्वाँ सर्वपापोभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।

अर्थ :- सब धर्मो को छोड़ कर मुझ अकेले ईश्वर के शर्ण में आ मैं तुझे सब पापों से मुक्त करूँगा इसलिऐ तुम चिन्ता मत कर।

अपने आप को सम्पूर्ण रूप से श्री कृष्ण के समर्पण करो और एक साथ मिल कर पुकारोः

हरे कृष्णा हरे कृष्णा

पुश्पार्चना करने हेतू इस शलोक का उच्चारण करें फिर हर नाम के अन्त में नमाः कह कर भगवान को फूल अर्पित करेंः

शलोक :- ओम नाना सुगंदितपुश्पानि यथा कालोद भवानिःच।

पुश्पांजली मयादतोग्रहाति श्री कृष्ण परमेश्वरो।।

१-ऊँ श्री कृष्णाये नमाः/स्वाहा
२-ऊँ केशवाये नमाः/स्वाहा
४-ऊँ चक्रधराये नमाः/स्वाहा
४-ऊँ जसोधलाये नमाः/स्वाहा
५-ऊँ धणेशामाये नमाः/स्वाहा
६-ऊँ पीतांमभराये नमाः/स्वाहा
७-ऊँ बिंद्राब्न बिहारये नमाः/स्वाहा
८-ऊँ श्री नन्द लालाये नमाः/स्वाहा
९-ऊँ माधवाये नमाः/स्वाहा
१०-ऊँ शामसुन्दरये नमाः/स्वाहा
११-ऊँ मदनमोहनाये नमाः/स्वाहा
१२-ऊँ मदनगौपालाये नमाः/स्वाहा
१३-ऊँ गिरिधराये नमाः/स्वाहा
१४-ऊँ मुरारिये नमाः/स्वाहा
१५-ऊँश्री बांसुरी बजायिये नमाः/स्वाहा
१६-ऊँ राधाये नमाः/स्वाहा
१७-ऊँ राधाकृष्णाये नमाः/स्वाहा
१८-ऊँ मनोहराये नमाः/स्वाहा
१९-ऊँ मनहराये नमाः/स्वाहा
२०-ऊँ गोकुल बसाये नमाः/स्वाहा
२१-ऊँ श्री रधोबीराये नमाः/स्वाहा
२२-ऊँ नटवर लालाये नमाः/स्वाहा
२३-ऊँ नन्दलाये नमाः/स्वाहा
२४-ऊँ बांकेबिहारिये नमाः/स्वाहा
२५-ऊँ गजाधराये नमाः/स्वाहा
२६-ऊँराममुकंद लालाये नमाः/स्वाहा

२७-ऊँ अविनाशिये नमाः/स्वाहा
२८-ऊँ यादौनायकाये नमाः/स्वाहा

२९-ऊँ ज्गतधाराये नमाः/स्वाहा
३०-ऊँ उत्यउत्माये नमाः/स्वाहा

३१-ऊँ अर्जनस्खाये नमाः/स्वाहा
३२-ऊँ साढीब्ढाये नमाः/स्वाहा

३३-ऊँ गवालालाये नमाः/स्वाहा
३४-ऊँ श्यांभराये नमाः/स्वाहा

३५-ओम म्खनचोराये नमाः/स्वाहा
३६-ओम साँवराये नमाः/स्वाहा

३७-ऊँ ग्यूलोकबसाये नमाः/स्वाहा
३८-ऊँ गोवर्धन धराये नमाः/स्वाहा

३९-ऊँ क्मलापतिये नमाः/स्वाहा
४०-ऊँ मथुरानिवासये नमाः/स्वाहा

४१-ऊँ बर्जनाथये नमाः/स्वाहा
४२-ऊँ दौणदयालाये नमाः/स्वाहा

४३-ऊँ बन्दोदये नमाः/स्वाहा
४४-ऊँ सिथराये नमाः/स्वाहा

४५-ऊँ बन्सीधराये नमाः/स्वाहा
४६-ऊँ करुनासंधोये नमाः/स्वाहा

४७-ऊँ जगदेशाये नमाः/स्वाहा
४८-ऊँ कुलदीप्काये नमाः/स्वाहा

४९-ऊँ गौलालाये नमाः/स्वाहा
५०-ऊँ गौपीनाथाये नमाः/स्वाहा

५१-ऊँ वेशम्बराये नमाः/स्वाहा
५२-ऊँ बिशनाये नमाः/स्वाहा

५३-ऊँ ज्सयोनाये नमाः/स्वाहा

५४-ऊँ बन्सीवालाये नमाः/स्वाहा

५५-ऊँ स्नातनरूपाये नमाः/स्वाहा

५६-ऊँ सर्वाधराये नमाः/स्वाहा

५७-ऊँ भावनाये नमाः/स्वाहा

५८-ऊँ परमात्रदाये नमाः/स्वाहा

५६-ऊँ वेष्णोरूपाये नमाः/स्वाहा

६०-ऊँ पतीत्पावनाये नमाः/स्वाहा

६१-ओम हरीये नमाः/स्वाहा

६२-ओम ईश्वराये नमाः/स्वाहा

६३-ऊँ मदसूदनाये नमाः/स्वाहा

६४-ऊँ अल्खनाथाये नमाः/स्वाहा

६४-ऊँ कल्याणकारिये नमाः/स्वाहा

६६-ऊँ मंगलाकारये नमाः/स्वाहा

६७-ऊँ प्राणरख्शकाये नमाः/स्वाहा

६८-ऊँ दयामैये नमाः/स्वाहा

६६-ऊँ दुख्टस्महाराये नमाः/स्वाहा

७०-ऊँ भक्तरक्षाये नमाः/स्वाहा

७१-ऊँ गरूढगामये नमाः/स्वाहा

७२-ऊँ रखाये नमाः/स्वाहा

७३-ऊँ गुरूवये नमाः/स्वाहा

७४-ऊँ गोविन्दाये नमाः/स्वाहा

७४-ऊँ निर्गुनाये नमाः/स्वाहा

७६-ऊँ प्रभूदये नमाः/स्वाहा

७७-ऊँ बलदेवाये नमाः/स्वाहा

७८-ऊँ दामोद्राये नमाः/स्वाहा

७९-ऊँ राधेशामाये नमाः/स्वाहा
८०-ऊँ रधबीराये नमाः/स्वाहा
८१-ऊँ सुदर्षणचक्रधरिये नमाः/स्वाहा
८२-ऊँ दुखनिवार्नाये नमाः/स्वाहा
८३-ओम चत्रभुजाये नमाः/स्वाहा
८४-ऊँ ज्ञातलोच्नाये नमाः/स्वाहा
८५-ऊँ अहंकारमोचनाये नमाः/स्वाहा
८६-ऊँ माधेलालाये नमाः/स्वाहा
८७-ऊँपर्मावतार धारिये नमाः/स्वाहा
८८-ऊँनरसिंध औताराये नमाः/स्वाहा
८९-ऊँ राधवाये नमाः/स्वाहा
९०-ऊँ निरंजन रूपाये नमाः/स्वाहा
९१-ऊँ मुरलीमनोहराये नमाः/स्वाहा
९२-ऊँ अयोधयानाथाये नमाः/स्वाहा
९३-ऊँ धनुषधरिये नमाः/स्वाहा
९४-ऊँ गोसानिये नमाः/स्वाहा
९५-ऊँ पापहारिये नमाः/स्वाहा
९६-ओम कन्समर्दनाये नमाः/स्वाहा
९७-ऊँ महा महात्माये नमाः/स्वाहा
९८-ऊँ कन्हयालालाये नमाः/स्वाहा
९९-ऊँ काहनाये नमाः/स्वाहा
१००-ऊँ कालीनाथाये नमाः/स्वाहा
१०१-ऊँ मोरमुकट दाराये नमाः/स्वाहा
१०२-ऊँ प्राणदाताये नमाः/स्वाहा
१०३-ऊँ हर्ताये नमाः/स्वाहा
१०४-ऊँ हरीहराये नमाः/स्वाहा
१०५-ऊँ देवकी नन्दनाये नमाः/स्वाहा
१०६-ऊँ बाल गोपालाय नमाः/स्वाहा
१०७-ऊँअहंकार नाशनाये नमाः/स्वाहा
१०८-ऊँ श्री कृष्णाये नमाः/स्वाहा

ऊँ तेज्योसि शुक्रमसि ज्योत्रासि धामासि परेन्दरानाम अणादर्शटम देवज्नेम ओम सर्वशक्तिमान कृष्णाय नमाः/स्वाहा

नोट- चोरासी लाख योनियों में से केवल एक मानव (इन्सान) को ही कर्म करने का अधिकार है। इस कारण अगर ८४ के चक्रव्यूह को याने जन्म मृत्यु के बन्धन से मुक्ति चाहें तो प्रातः सांय भवसागर से पार लगाने वाली माला में गीता जी के इस शलोक को पढ़े :-

शलोक ७/१९ - बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते।

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।।

ऊँ नमो भगवते वासदेवाये ऊँ श्री कृष्णाये नमो नमाः

कृष्णाय वासदेवाये देवकीनन्दनायच नन्दगोपकुमाराये श्री कृष्णाये नमो नमा वासदेव स्तमदेवम कंस चानूर मर्दनम देवकी प्रमात्रदम कृष्णम जगतगुरू हाकृष्ण मन्साबॉसी कॉसी यादौ नंदन ईमामवस्था स्मप्राप्तम अनाथम किम न रक्षिसी

आदि प्रभातस अछि मुचरिजे मन किन सुरजे श्री भगवान
निर्मल भवसागर तरिजे निशकल यार भूल करिजे श्रान
त्रशिवय मल अभिमानक हीरजे मन किन सुरजे श्री भगवान
संमसार भ्रम मनिथ दमव्य बीरजे सू हंम सरिजे ठकीरथ प्राण
इन्द्रय शोमीरथ सुमरण फिरजिह मन किन सुरजे कृष्ण भगवान
त्याग सत्य राग दीशि निशि विरयजे सूहम सारज दरयजे धयान
मन थर करयजे मंत्र परयजे मन किन्य सारिजे श्री भगवान
चर्न क्मलन अछ जरजे यछि पछि श्रदायि भावनायि सान
मन पूजायि सत्य दिह मुचरजे मन किन्य सारिजे श्री भगवान
नाना स्वर्नबात्र बरजे भवनायि सत्य खीर खँड पकवान
महाराजस पान आपरयजे मन किन्य सारिजे श्री भगवान
अश्टदल हर्दयस मन्ज वथर्यजे निर्वासन आसन की थान
कृष्ण ध्यान सत्य पान पान आवरयजे मन किन्य सारिजे श्री भगवान
कर्म जोर मोह राजस फरयजे सत्य शम दम की पहल्वान
आनन्द नगरस राजा करयजे मन किन्य सारिजे श्री भगवान
बालामुकंदुन ध्याना दरयजे कृष्ण जन्मन हुन्ज हरयजे हान
न जाह जविजे न जाष मरयजे मन किन्य सारिजे श्री भगवान

इति श्री कृष्ण शत नामावली माला सम्पूर्नम।

गिलास से हाथ पर चावल ले कर पानी डाल कर पढे -

ऊँ शन्नो देवीर्-अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये।

शंयोर्-अभिस्रवन्तु नः।

फिर पानी वापस गिलास में डाल कर इसी पानी से अपने आप को छिडकें। मंत्र हैः-

हरे कृष्ण – हरे कृष्ण – हरे कृष्ण

✡ ✡ ✡ ✡

ऊँ श्री शंकर भगवान की एक माला का होम
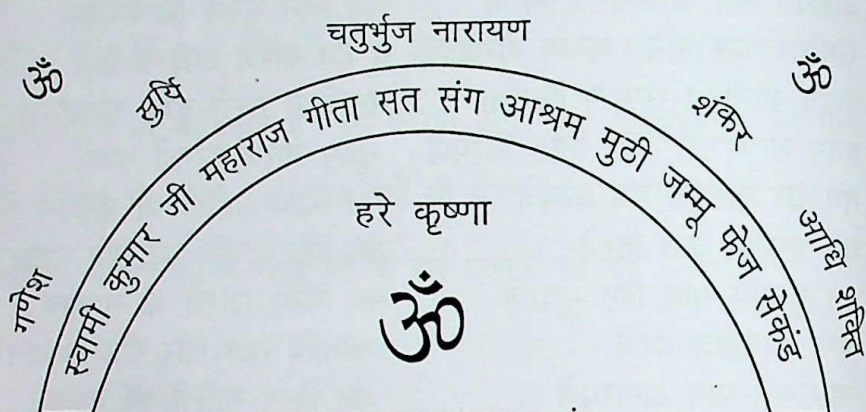
आधार जग्तुक कुनुय छु मंत्र

शिवाय नमाः ऊँ नमाः शिवाये

च गाशि तोश यलि यियिहम दयाये

शिवाय नमाः ऊँ नमाः शिवाय

शंकर भगवान की एक माला का होम

या

शंकर भगवान की एक माला की पुश्पार्चना

हाथो में फूल लेकर भगवान सदाशिव का ध्यान कर के नीचे लिखे मंत्रों का उचार्ण करते फूल डालो

शिवाय नमः ऊँ शिवाय नमः शिवाय नमः ओम नमाः शिवाय

शिवाय नमः ऊँ शिवाय नमः शिवाय नमः ओम नमाः शिवाय

शिवाय नमः ऊँ शिवाय नमः शिवाय नमः ओम नमाः शिवाय

प्रणतोस्मि महादेव, प्रपन्नोस्मि सदाशिव, निवारय महामृत्युं, मृत्युजय नमोस्तुते।

मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु-जरारोगैः, पीडितं भवबन्धनात्।।

कर्पूर-गौरं करुणावतारं, संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम सदा

रमन्तं हृदर्यविन्दे भवं भवानी सहितम नमामि

कंठगन तिल की आहोती

अब पवित्र अग्नि में भगवान सदाशिव के हर नाम के अन्त में स्वाहा करते हवन सामग्री और शुध घी की आहोतिया डालें फिर विश्वास रखो अगर आप पूरी श्रद्धा से इस लिखी माला का स्वाहा करोगे तो भगवान शंकर जो आशतोश भी कहलाते है प्रसन्न हो कर हर एक की मनोकामना पूरी करेंगे ।

पहले भावना से सदाशिव की भावना पूर्वक प्रार्थना करें

सदाशिव सॉमियो कर मयोन चारै

यि ब्रह्मन जन्म मा मेलम दुबारै

दया धर्मय बंचारै सत्य वारै स्हा रोजत्म त बोजत्म जार पारै

दया धर्मय बंचारै सत्य वारै स्हा रोजत्म त बोजत्म जार पारै

दया धर्मय बंचारै सत्य वारै स्हा रोजत्म त बोजत्म जार पारै

दया धर्मय बंचारै सत्य वारै स्हा रोजत्म त बोजत्म जार पारै

छि अख कथ यी बनन्य गछि पे पनन्य जान

यमिय जन्म मे नेरुन गाछ यि अर्मान

सत्य बासुन त कासुन गाछ मे अज्ञान

मर्न वकते सारुन गाछुस शिव सुन्द ध्यान

सु चेथ पथ कुन काचिथ त्रावुन गोछुस प्राउण

यिहय कथ नन्य छि कन्य छ संगि फार्स

चंदुन छुय हॅट त वुछतन शीत्जार्स

स्व हट यथ लगि तथ चीजस तरान गान

स्व कन्य यथ लगि चीजस करान सान

हचि त कनि यलि युथ आसि स्वभाव

वने क्या आसि कियुथ अद शिव सुन्द नाव

छ अस्ताथ मे दोहे शिव शिवय कोर

छ अस्ताथ मे दोहे शिव शिवय कोर

छ अस्ताथ मे दोहे शिव शिवय कोर

तोता चानी मे यछि पजय या अपज वॅन्य

यछाये चानि गोड वानी मे निश नन्य

कुलुफ यिथ पाठय छि मुचरन काद खन्न

गछान ब्यान ब्यान छि तिम पननन मकात्र

छुसे फरयादय आमुत बोजतम दाद

तिथै पाठय करत असि सारिनय गम मन्ज शाद

अगर काँह वँसि मन्ज करि आँत रुस पाफ

अकय शिव माला फिरन सत्य तस कर्ख माफ

पुश्पार्चना की सूरत में इस शलोक का जरूर उच्चारण करें फिर

हर नाम के अंत पर नमाः कहकर निराकार भगवान के साकार रूप

मूरती पर फूल चढायें :-

शलोक ऊँ नाना सुगंधित पुश्पानि यथाकालोद भवानिःच

पुशपांजली म्यादतोग्रषानः सदाशिवो

१ ऊँ शिवाये नमाः/स्वाहा २ ऊँ हराये नमाः/स्वाहा

२ ऊँ मढाये नमाः/स्वाहा ४ ऊँ रुदाये नमाः/स्वाहा

५ ऊँ पुशकराये नमाः/स्वाहा ६ ऊँ पुष्पलोचनाये नमाः/स्वाहा

७ ऊँ अर्थगमये नमाः/स्वाहा ८ ऊँ सदाचाराये नमाः/स्वाहा

९ ऊँ श्रवाये नमाः/स्वाहा
१० ऊँ शंभुवाये नमाः/स्वाहा

११ ऊँ महीश्वराये नमाः/स्वाहा
१२ ऊँ गौरीभरताये नमाः/स्वाहा

१३ ऊँ गणेश्वराये नमाः/स्वाहा
१४ ऊँ अष्टमूरतिये नमाः/स्वाहा

१५ ऊँ वेशनो मूरतिये नमाः/स्वाहा
१६ ऊँ त्रवर्गसोर्गसाधनाये नमाः/स्वाहा

१७ ऊँ ध्यान धाराये नमाः/स्वाहा
१८ ऊँ अप्रछेदे नमाः/स्वाहा

१९ ऊँ वेश्नोरचपाये नमाः/स्वाहा
२० ऊँ वर्स्वबाहनाये नमाः/स्वाहा

२१ ऊँ ईश्याये नमाः/स्वाहा
२२ ऊँ पिनाकीये नमाः/स्वाहा

२३ ऊँ खटवागीये नमाः/स्वाहा
२४ ऊँ मूगराये नमाः/स्वाहा

२५ ऊँ महायूगये नमाः/स्वाहा
२६ ऊँ ब्रह्माये नमाः/स्वाहा

२७ ऊँ गूप्ताये नमाः/स्वाहा
२८ ऊँ दुर्जटाये नमाः/स्वाहा

२९ ऊँ पोर्शाये नमाः/स्वाहा
३० ऊँ नीलकंठाये नमाः/स्वाहा

३१ ऊँ विशालाखाये नमाः/स्वाहा
३२ ऊँ धर्मधमाये नमाः/स्वाहा

३३ ऊँ सुर्यताप्नाये नमाः/स्वाहा
३४ ऊँ प्रयभकतियाये नमाः/स्वाहा

३५ ऊँ शुम्शानसथाये नमाः/स्वाहा
३६ ऊँ नीतिये नमाः/स्वाहा
३७ ऊँ तेजिम्ये नमाः/स्वाहा
३८ ऊँ महातेज्सवये नमाः/स्वाहा
३९ ऊँ सनात्नाये नमाः/स्वाहा
४० ऊँ त्रेलोचनाये नमाः/स्वाहा
४१ ऊँ सर्वगोचराये नमाः/स्वाहा
४२ ऊँ सिथराये नमाः/स्वाहा
४३ ऊँ गन्काये नमाः/स्वाहा
४४ ऊँ सक्रतये नमाः/स्वाहा
४५ ऊँ दुर्लभवे नमाः/स्वाहा
४६ ऊँ दुर्लभवे नमाः/स्वाहा
४७ ऊँ द्रुगःवे नमाः/स्वाहा
४८ ऊँसर्ववेद वैशादराये नमाः/स्वाहा
४९ ऊँअद्यातम योगनीलहे नमाः/स्वाहा
५० ऊँ स्तंतवे नमाः/स्वाहा
५१ ऊँ शुभांगाये नमाः/स्वाहा
५२ ऊँ जगदेशाये नमाः/स्वाहा
५३ ऊँ जनार्धनाये नमाः/स्वाहा
५४ ऊँ भस्मशुधीकराये नमाः/स्वाहा
५५ ऊँ उज्सवे नमाः/स्वाहा
५६ ऊँ शुधविग्रहाये नमाः/स्वाहा
५७ ऊँ महाजदुये नमाः/स्वाहा
५८ ऊँ महाग्रुर्ताये नमाः/स्वाहा
५९ ऊँ महाभुताये नमाः/स्वाहा
६० ऊँ पंचजननिये नमाः/स्वाहा

६१ ऊँ शत्रोपात्नाये नमाः/स्वाहा
६२ ऊँ ज्ञानवानये नमाः/स्वाहा
६३ ऊँ अचलेश्वराये नमाः/स्वाहा
६४ ऊँ धनुर्धरवये नमाः/स्वाहा
६५ ऊँ धनुर्वेदयाये नमाः/स्वाहा
६६ ऊँ सतिये नमाः/स्वाहा
६७ ऊँ धर्मसाधनाये नमाः/स्वाहा
६८ऊँ वेशवकर्मा वेशार्धाये नमाः/स्वाहा
६९ ऊँ वेतरागोवये नमाः/स्वाहा
७० ऊँ भूतभावनाये नमाः/स्वाहा
७१ ऊँ विनीतात्माये नमाः/स्वाहा
७२ ऊँ कल्याणप्रकर्ते नमाः/स्वाहा
७३ ऊँ सर्वलोकप्रजापतये नमाः/स्वाहा
७४ ऊँ महातेजाये नमाः/स्वाहा
७५ ऊँ लोकनाथये नमाः/स्वाहा
७६ ऊँ शांताये नमाः/स्वाहा
७७ ऊँ क्मंडलधराये नमाः/स्वाहा
७८ ऊँ धनुवे नमाः/स्वाहा
७९ ऊँ महाबुधिये नमाः/स्वाहा
८० ऊँ तीर्थरूपाये नमाः/स्वाहा
८१ ऊँ तीर्थनामााये नमाः/स्वाहा
८२ ऊँ विमोचनाये नमाः/स्वाहा
८३ ऊँ भालरूपाये नमाः/स्वाहा
८४ ऊँ करताये नमाः/स्वाहा
८५ ऊँ वीरभद्राये नमाः/स्वाहा
८६ ऊँ वीराटसरूपाये नमाः/स्वाहा

८७-ऊँ सधापतिये नमाः/स्वाहा

८८-ऊँ वेशुगुपताये नमाः/स्वाहा

८९-ऊँ वेशुकरताये नमाः/स्वाहा

९०-ऊँ भीमाये नमाः/स्वाहा

९१-ऊँ गायत्रीवोलभाये नमाः/स्वाहा

९२-ऊँ भालःनेत्राये नमाः/स्वाहा

९३-ऊँ क्षेत्रपालिकाये नमाः/स्वाहा

९४-ऊँ यज्ञसरेशठाये नमाः/स्वाहा

९५-ऊँ चतुरवेदाये नमाः/स्वाहा

९६-ऊँ बहुरूपाये नमाः/स्वाहा

९७-ऊँ निराकाराये नमाः/स्वाहा

९८-ऊँ शूकनाशनाये नमाः/स्वाहा

९९-ऊँ चतुरमुखाये नमाः/स्वाहा

१००-ऊँ सिधीदाताये नमाः/स्वाहा

१०१-ऊँ भूपतिये नमाः/स्वाहा

१०२-ऊँ प्रशंतबुधिये नमाः/स्वाहा

१०३-ऊँ रसदाये नमाः/स्वाहा

१०४-ऊँ सूक्षमरूपाये नमाः/स्वाहा

१०५-ऊँ सर्शटी कर्ताये नमाः/स्वाहा

१०६-ऊँ कँठदाराये नमाः/स्वाहा

१०७-ऊँ महामंगलकारिये नमाः/स्वाहा

१०८-ऊँ लिंगरूपाये नमाः/स्वाहा

ऊँ तेजोसि, शुक्रमसि ज्योतिर्सि धामासि l

ओम सर्वज्ञान सोरूपाये नमाः/स्वाहा

जिस को लोहा न काटे न अग्नि जलावे न पानी बहावे न मोल

मिटावे वही आत्मा स्चदानन्द में है शिवोहं शिवोहं शिवोहं

अजर ओर अमर जिस का वेदों ने गाया हे। यही ज्ञान अरजुन

को हरी ने सुनाया शिवोहं शिवोहं शिवोहं

ऊँ सदाशिवाये स्वाहा ऊँ सदाशिवाये स्वाहा

शिवोहं शिवोहं शिवोहं

मनोबुधि अहंकार चित तानी नाहम न च श्रोत्रजुवे न च ज्ञान नेत्रे

न च दियोम भूमरि न तेजो न वायो न चिदानंद रूपम शीवहुम शिवहुम

न च प्राण संधयो न च पंचवायो न वास्तधात्र न वा पंचः कशाः न

वाक पानि पादम न चः औप्सथपापो चिदात्रदरूपम शिवोहं शिवोहं शिवोहं

न मैदुवेशरागो न मैलोभमोहो मदुदन्योमे न्यो मात्सरयःभवाः न

धमों न चाथो न कामो न मूख्या चिदात्रद रूपेम शिवहुम शिवहुम

न म्रत्यो न शंका न मै जात भेदा पितान्युहे न्युमाता च्ज्जन्मा न

बन्धू न मेत्रम शषिया चिदानन्द रूपा शिवोहं शिवोहं शिवोहं

अहं निरोक्लपो निराकार रूपो लगुत्वातचि सर्वत्र सर्विइन्द यानाम

न चः संग्तम न्यो मुकति न मेयाः चिदानन्द रूपा शिवोहं शिवोहं शिवोहं

✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡

शिव चामर स्तुति

✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिंकर पटली,

कृत-ताडन-परिपीडन-मरणागम-समये ।

उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्,

शिवशंकर शिवजी शंकर हर में हर दुरितम् ।।१।।

अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु-सञ्चय दलिते,

पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण-चलिते ।

शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्,

शिवशंकर शिवजी शंकर हर में हर दुरितम् ।।२।।

भव भञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्,

दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन् ।

गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्,

शिवशंकर शिवजी शंकर हर में हर दुरितम् ।।३।।

शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये,

कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये ।

द्विज-क्षत्रिय-वनिता शिशुदर कम्पित ह्यदये,

शिवशंकर शिवजी शंकर हर में हर दुरितम् ।।४।।

भवसम्भव विविधामय परिपी-डितवपुषं,

दयितात्मज ममताभर-कलुषी-कृत-ह्यदयम् ।

करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं,

शिवशंकर शिवजी शंकर हर में हर दुरितम् ।।५।।

✡ ✡ ✡ ✡

इति श्री शंकर भगवान शत नामावली माला स्मपूर्नम

अब बायें हाथ में पानी भरा गिलास ले कर दायें हाथ पर चावल ला कर गिलास से पानी डालें और पढे

शन्नो देवीर्-अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये । शंयोर्-अभिस्रवन्तु नः ।

अब दाये हाथ पर डाला पानी वापस गिलास में डाल कर अपने को और वहाँ बैठे भगत जनों पर पानी छिडकें :-

हर हर महादेव की जय हर हर महादेव की जय

हरे कृष्ण --- हरे कृष्णा --- हरे कृष्णा

✡ ✡ ✡ ✡

माता जगत जन्नी भवानी की एक माला का होम
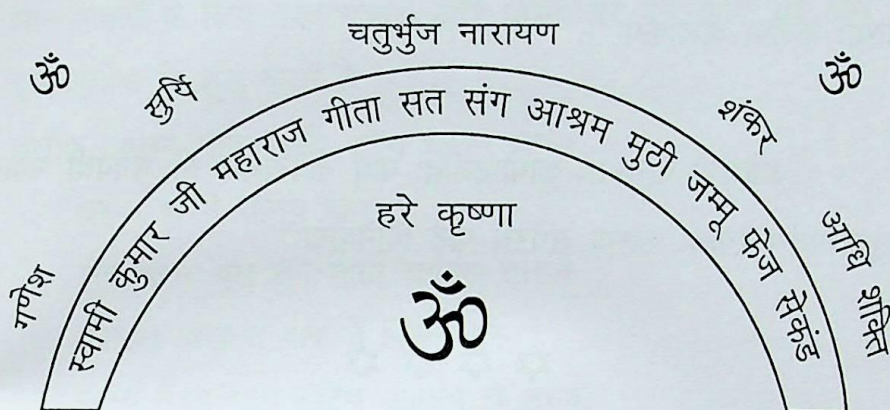
देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद,

प्रसीद मातर् जगतोऽखिलस्य।

प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,

त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ।।

आधि शक्ति जगत जन्नी माता की एक माला का होम

या

आधि शक्ति जगत जन्नी माता की एक माला की पुष्पार्चना

ॐ असयि श्री भवानी शत नामः ईकावली माता दुर्गा भगवती अन्शटूम छंद आध्या शक्तिया श्री भगवती भवानी देवता हींम बीजम श्री शखत्याः कलीम केलःकम

आत्मनो वांगम्नाः कायोपाजीतः पाप नविर्नाथम श्री भगवती भवानी सन्तुश्टनार्थम स्कलः काम्ना सधेरथे पाठे विनियोगाः

✡ ✡ ✡ ✡

ॐ पुश्पांजली समर्पण

शलोक :- ॐ नाना सुगंधित पुश्पानि यथाकालो भवानी चः

पुश्पांजली मयादतोग्रहान माता परमेश्वरी

अर्थ ही जगत जन्नी माता यथा समय उत्पन होने पर नाना प्रकार के सुंगधित पुष्प मैने पुश्पांजली के रूप में चुन कर अब उन को आप के चरणकमलों में अर्पित करने जा रहा हूँ आप मुझ मंत्र हीन और विधि हीन लेकिन श्रद्धा से भरपूर होने पर इन को स्वीकार करना।

दशाम करें

श्रीम ओम स्वाः गाम गोम महा गौरिये नमाः

जगत जन्नी माता की जय हो तीन बार कहे

जगत जन्नी माता भवानी जो भयहारनी संकटनिवारनी के साथ साथ भक्तों के लिये कल्याणकारी और अभय वर देने वाली का होम इस शलोक से शुरू करते हैं :-

शलोक आसय मॉज आयि शरण चानन चर्णन
वरन्न करने चोनुय ब्जर
सुय बजर युस छुय माता जगतस तारान
कासान दाख त दाद जे दिवान पूर
अस्य तवय गुल्य गंडिथ आमत्य चे शरण
गछ प्रसन असि कर अज्ञान दूर

गायत्रे मंत्र ऊँ भूर्भुवाः स्वाः त्त सवितुर वर नियम भर्गू देवसि धीमहि धियोयूना प्रचोदयात --तीन बार--

शलोक :-

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्त-माल्यूं
मौलौ हटेन निहिंत महिषा सुरस्या ।
पादाम्बुजं भवतु में, विजयाय मञ्जु
मञ्जीर शिरजत मनोहरम अम्बिकाया ।।

सुय रोन्यि पाद चोन रूजयतन मे इदयस गरि गरि युथ बोज श्रान्य श्रान्य ताल
सुय मनोहर पाद चोन बन्यतन मे हीतो जे जे कारुक मे हाव्यतन कमाल
आयि शरणा चे पादन विने किन्य छि नेमथय व्याकुलतायि मन्ज माता रछतम चय
व्याकुलतायि मन्ज बजि बजि आपधयि मन्ज ग्रह पीढायि मन्ज माता रछतम चय

अब शुध घी और हवन सामग्री अग्नि में स्वाहा करके डालते रहें और अगर पुष्प अर्चना करनी हो तो नमाः करें।

१-ऊँ सतिये नमाः/स्वाहा
२-ऊँ केशवाये नमाः/स्वाहा
३-ऊँ भूमोचनये नमाः/स्वाहा
४-ऊँ जसोधलाये नमाः/स्वाहा
५-ऊँ शूवेश्वरिये नमाः/स्वाहा
६-ऊँ पीतांमभराये नमाः/स्वाहा
७-ऊँ महात्पाये नमाः/स्वाहा
८-ऊँश्री नन्द लालाये नमाः/स्वाहा
९-ऊँ बुधिये नमाः/स्वाहा
१०-ऊँ शामसुन्दरये नमाः/स्वाहा
११-ऊँ चित्राये नमाः/स्वाहा
१२-ऊँ मदनगौपालाये नमाः/स्वाहा
१३-ऊँ जोत्रलोचनीये नमाः/स्वाहा
१४-ऊँ मुरारिये नमाः/स्वाहा
१५-ऊँ जयाये नमाः/स्वाहा
१६-ऊँ राधाये नमाः/स्वाहा
१७-ऊँ आरिये नमाः/स्वाहा
१८-ऊँ मनोहराये नमाः/स्वाहा

१९-ऊँ चंडघंटाये नमाः/स्वाहा २०-ऊँ मुनाये नमाः/स्वाहा

२१-ऊँ श्री स्तिानंदस्रूपनीये नमाः/स्वाहा २२-ऊँ चितरूपाये नमाः/स्वाहा

२३-ऊँ अहंकारनिवारनीये नमाः/स्वाहा २४-ऊँ चैतिये नमाः/स्वाहा

२५-ऊँ कष्टनिवारनीये नमाः/स्वाहा २६-ऊँ सर्वमहामंत्रवेधयाये नमाः/स्वाहा

अब फूल हाथ में लेकर पंच्सतवी का एक शलोक पढे

ब्रह्मेन्द्र-रुद्र-हरि-चन्द्र-सहस्त्र-रश्मि-स्कन्द-द्विपानन-हुताशन-वन्दितायैl

वागीश्वरी! त्रिभुवनेश्वरी! विश्मातः अन्त-र्बहिश्च कृत-संस्थितये नमस्ते ll

अर्थ :- सरस्वति त्रपूरसुन्दरी जगत माता भौनेश्वरी छख आसवन्य चय।

ब्रह्मा इन्दर सुर्य चंदरम कुमार वेशनो गणेश छिय पूजान चेय ।।

अन्दर नबर वऊँतिथ त्रभवनस सारयसय,

गुल्य गान्डिथ प्रनाम माज वातिनय चय

२७-ऊँ भुवाये नमाः/स्वाहा २८-ऊँ देवमाताये नमाः/स्वाहा

२९-ऊँ श्री सर्वसुन्दरिये नमाः/स्वाहा ३०-ऊँ अभुयाये नमाः/स्वाहा

३१-ऊँ दक्षश कुमारिये नमाः/स्वाहा ३२-ऊँ महाकाली माताये नमाः/स्वाहा

३३-ऊँ ज्वाला माताये नमाः/स्वाहा ३४-ऊँ चामुन्डाये नमाः/स्वाहा

३५-ऊँ रत्नप्रयाये नमाः/स्वाहा ३६-ऊँ अनीकर्वनाये नमाः/स्वाहा

३७-ऊँ पाटलावतीये नमाः/स्वाहा ३८-ऊँ कुलःमंजरिये नमाः/स्वाहा

३९-ऊँ अनंन्ताये नमाः/स्वाहा ४०-ऊँ दक्षशयज्ञ विनाशनीये नमाः/स्वाहा

४१-ऊँ सतिवतीये नमाः/स्वाहा ४२-ऊँ सिधग्तीये नमाः/स्वाहा

४३-ऊँ कालीमाताये नमाः/स्वाहा ४४-ऊँ वनगडिये नमाः/स्वाहा

४५-ऊँ नैनादेविये नमाः/स्वाहा ४६-ऊँ शाम्भवीये नमाः/स्वाहा

४७-ऊँ अपर्नाये नमाः/स्वाहा ४८-ऊँ पाटलाये नमाः/स्वाहा

४९-ऊँ मनूषजन्मसंवारनीये नमाः/स्वाहा ५०-ऊँ विकर्माये नमाः/स्वाहा

५१-ऊँ सुन्दरीये नमाः/स्वाहा ५२-ऊँ वनदुर्गाये नमाः/स्वाहा

५३-ऊँ ब्रह्मनीये नमाः/स्वाहा

अब हाथ में फूल ले कर पंच्सतवी का यह शलोक पढें

ददातीष्टान्-भोगान्-क्षपयति रिपून्-हन्ति-विपदो

दहत्याधीन्-व्याधीन्-शमयति सुखानि प्रतनुते।

हठात्-अन्तर्दु:खं दलयति पिनष्टीष्ट-विरहं

सकृत्-ध्याता देवी किम्-इव निर्-अवद्यं ने कुरुते ।।

अर्थ :- मतलब छुख दिवान दुशमन च गालान

आप्दायन छुख च नाश करान

आदीन जालान विपदायन शुमरावान

सुख न समपदा छुख च व्यस्तारान

ॲन्दरिम दुख त दाद्य बखतन च गालान

यिम अकि लटि माज ध्यान चोन करान

तिम अद कमि पाप निशि छिन मौकलान

यिम सदा गुल्य गंडिथ च्यय कुन छि रोज़ान

आयि शरण च माता.............

५४ ऊँ महेश्वरिय नमाः/स्वाहा
५५ ऊँ कुमकरिये नमाः/स्वाहा
५६ ऊँ चामुन्डाये नमाः/स्वाहा
५७ ऊँ लक्षमीये नमाः/स्वाहा
५८ ऊँ ज्ञानक्रयाये नमाः/स्वाहा
५६ ऊँ चंडमुन्ड विनाशनीये नमाः/स्वाहा
६० ऊँ सरसुन्दरीये नमाः/स्वाहा
६१ ऊँ मातंगीये नमाः/स्वाहा
६२ ऊँ मातंगमुनिपूज्ताये नमाः/स्वाहा
६३ ऊँ इन्दरिये नमाः/स्वाहा
६४ ऊँ वेशनवीये नमाः/स्वाहा
६५ ऊँ वरहिये नमाः/स्वाहा
६६ ऊँ गंगाये नमाः/स्वाहा
६७ ऊँ निशुम्ब शुम्बहन्तरये नमाः/स्वाहा
६८ ऊँ किशवरये नमाः/स्वाहा
६६ ऊँ महीश्वासुर मरदनीये नमाः/स्वाहा
७० ऊँ सर्वशुत्रो गात्नीये नमाः/स्वाहा
७१ ऊँ मधुकंठि हनत्रये नमाः/स्वाहा
७२ ऊँ सर्वदानौगातिनये नमाः/स्वाहा
७३ ऊँ एकसरकन्याये नमाः/स्वाहा
७४ ऊँ काल रात्रये नमाः/स्वाहा
७५ ऊँ अपूरढाये नमाः/स्वाहा
७६ ऊँ वर्धमाताये नमाः/स्वाहा
७७ ऊँ दुश्टसम्हारनिये नमाः/स्वाहा
७८ ऊँ ज्ञातजननीये नमाः/स्वाहा
७६ ऊँ सर्वासुरविनाशनिये नमाः/स्वाहा
८० ऊँ विकर्माये नमाः/स्वाहा
८१ ऊँ वनदुर्गाये नमाः/स्वाहा

८२ ऊँ सर्वअस्तर धरनिये नमाः/स्वाहा

८३ ऊँ योवतीये नमाः/स्वाहा

८४ ऊँ त्पसवनीये नमाः/स्वाहा

८५ ऊँ प्रोढाये नमाः/स्वाहा

८६ ऊँ बालाप्रधाये नमाः/स्वाहा

८७ ऊँ महूद्रये नमाः/स्वाहा

८८ ऊँ अगनीज्वालाये नमाः/स्वाहा

८६ ऊँ परमेश्वरीये नमाः/स्वाहा

६० ऊँ सावित्रये नमाः/स्वाहा

६१ ऊँ ब्रह्मवादनीये नमाः/स्वाहा

६२ ऊँ वेशनोमाताये नमाः/स्वाहा

६३ ऊँ शिवदूतिये नमाः/स्वाहा

६४ ऊँ नारायनीये नमाः/स्वाहा

६५ ऊँ अनपूरनाये नमाः/स्वाहा

६६ ऊँ शीतलाये नमाः/स्वाहा

६७ ऊँ विधिये नमाः/स्वाहा

६८ ऊँ महाबालाये नमाः/स्वाहा

६६ ऊँ रुदर्मुखीये नमाः/स्वाहा

अब हाथ में फूल ले कर, पचंस्तवि श्लोक पढ़े

किं किं दुखं दनुज दलिनि! क्षीयते न स्मृतायां

का का कीतिः कुल कमलिनी! ख्याप्यते त स्तुतायाम्।

का का सिद्धि सुरवरनुते प्राप्यति नार्चितायां

कं कं योगं त्वयि न चिनते चित आलम्बितायाम्।।

कम सना दुख छि तिम हि दुखन गालवन्य

यिम गलन न चाने सुमरनि सांत्य

कुस छि नेकनामी ही क्लस खार्वन्य

युस न बनि चानि तोतायि सत्य

कुस कुस छि सिद्धि ही सदिदात्री

युस न प्रापत स्पदि चानि पूजायि सत्य

कम कम छि तिम योग ही जगत माता

यिम न स्यद्ध बनन चानि चिनत्न सत्य

आयि शरण च पादन वेनयि किन्य छि नम्यथय

इन आहोतियों के वासते मेवा अर्पन करें

१०० ऊँ कातियानिये नमाः/स्वाहा

१०१ ऊँ प्रतेखशाये नमाः/स्वाहा

१०२ ऊँ भद्रकालीये नमाः/स्वाहा

१०३ ऊँ जलोद्री नमाः/स्वाहा

१०४ ऊँ करालिये नमाः/स्वाहा

१०५ ऊँ तपस्वनीये नमाः/स्वाहा

१०६ ऊँ चिन्तपूरीये नमाः/स्वाहा १०७ ऊँ किशमांडाये नमाः/स्वाहा

१०८ ऊँ सिधिये नमाः/स्वाहा

ऊँ तेजोसि, शुक्रमसि ज्योतिर्सि धामासि ।

ओम जगतजननी सोरूपाये नमाः/स्वाहा

अब अंत में माता को खीर की आहोतिया दे कर संतुष्ट करें

१ ऊँ वीर वीर माताये नमाः/स्वाहा

२ ऊँ वीर सूवीर नन्दनीये नमाः/स्वाहा

३ ऊँ जे श्री जे दिखयाये नमाः/स्वाहा

४ ऊँ जे दा जे वर्दनीये नमाः/स्वाहा

५ ऊँ सर्वदेवमईपार्भाये नमाः/स्वाहा

६ ऊँ सिधप्रादश्कतीये नमाः/स्वाहा

७ ऊँ नमो नारायनीये नमाः/स्वाहा

८ ऊँ दुश्टमलेछ विनाशनीये नमाः/स्वाहा

६ ऊ दुरगती नाशनीये नमाः/स्वाहाँ

१० ऊँ महा गायत्रे सरूपाये नमाः/स्वाहा

११ ऊँ प्रथमशीलपुत्रीये नमाः/स्वाह

१२ ऊँ दुतियम ब्रह्यचारिये नमाः/स्वाहा

१३ ऊँ त्रतेमचंदरगंठाये नामः/स्वाहा

१४ ऊँ चतुथम कुशामन्डा सरूपाये नमाः/स्वाहा

१५ ऊँ पंचमसकन्द माताये नमाः/स्वाहा

१६ ऊँ शष्टम कातियायिमाताये नमाः/स्वाहा

१७ ऊँ स्पतेम कालीरात्रये नमाः/स्वाहा

१८ ऊँ महागौरे अष्टमयम नमाः/स्वाह

१६ ऊँ नमयम सिधदात्रिये च नमाः/स्वाहा

२० ऊँ नवदुर्गाये प्ररिकियतथा नमाः/स्वाहा

ऊँ तेजोसि, शुक्रमसि ज्योतिर्‌सि धामासि ।
ओम जगतजननी सोरूपाये नमाः/स्वाहा

ओम जगतज्ननी सरूपाये नमाः/स्वाहा

ऊँ भूर्भुवाः स्वाः त्त सवितुर वर नियम भर्गू देवसि

धीमहि धियोयूना प्रचोदयात नमाः/स्वाहा

अब एक थाली में विष्टर के लिए अग्नि में आहोतियाँ डालन के लिऐ इसमें थोड़ा सा घी डाल कर पकाया अन्न सब्जी यज्ञशाला में ला कर रखे इसके साथ एक और थाली में प्रेरेप्युन के लिए रखें पहली थाली से अन्न की आहोतियाँ अग्नि में ड़ालें पहली आहोती अग्नि के उत्तर में

अग्निये स्वाहा दूसरी आहोती दक्षिण में होमाये स्वाहा

बाकी आहोतियाँ अगनी के बीच में डालें मंत्र यह हैं

मित्राये स्वाहा वरुनाये स्वाहा इन्दराये स्वाहा ईन्दरागनी
भयाम स्वाहा विशवेभियो देवेभया स्वाहा प्रजापते स्वाहा
अनुमितिये स्वाहा धन्वणत्रे स्वाहा दास्तोशप्तये स्वाहा
वास्देवाये स्वाहा शंकरसनाये स्वाहा पधमनाये
स्वाहा अनिरुद्राये स्वाहा सतियाये स्वाहा पोर्शये स्वाहा
अचोताये स्वाहा माधवाये स्वाहा गोवेंदाये स्वाहा
गौपालाये स्वाहा सहसरनामने वेशनवे लक्षमी नारायनाये स्वाहा

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमति, काली कला मालिनी

मातंगी विजया जया भगवती, देवी शिवा शाम्भवी ।

शक्तिः शंकर-वल्लभा त्रिनयना, वाक्-वादिनी-भैरवी

ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी, माता कुमारी-त्यसि ।।

अनीनमंत्र पाठेन आत्मनोवांग्मना कायो पार्जता पापनिवार्नार्थम

श्री ईशटदेवी महारज्ञनी भगवती प्रतीरथम भगवती श्री व्रीडा

भगवती वैखरी भगवती वितस्ता भगवती यमना भगवती

कालिका भगवती सिधलक्षमी महात्रपूर सुन्दरी स्हत्र नामनी

भवानी स्परिवारासिवाहना सायोधा सांगा प्रेताम प्रेतिया अस्तो।

नैवेद्य को दानों हाथों से पकड़ते हुये पढें

अमृतेश-मुद्रया-अमृतीकृत्य अमृतम-अस्तु अमृतायतां नैपंद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यां-पूष्णो हस्ताभ्याम्-आददे महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश-देवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वर-देवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु-पतये नारायणाय दुर्गाये त्रयम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्नि-ष्वात्तादिभ्यः पितृ-गणदेवताभ्यः। भगवते वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय-पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय-सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नारायणाय भगवते भवाय देवाय-शर्वाय-देवाय-रुद्राय-देवाय पशुपतये देवाय उग्राय-देवाय भीमाय देवाय ईशनाय देवाय महा-देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय भगवते विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विध्नेशाय विध्नभक्षाय वललभा-सहिताय श्रीमहागणेशाय। भगवते कर्लीकां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय पार्वती नन्दनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते हां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय तेजोरूपाय परमार्थ-साराय प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्ये टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका-भगवत्यै श्री शारदा-भगवत्यै, ब्रीडा भगवत्यै वैखरी भगवत्यै बितस्ता भगवत्यै

एक थाली में ऩैवेद्य तथा दूसरी में चटू और पांच म्यचियां या टुकड़े रख कर गणेश जी का ध्यान करके शुद्ध पानी अपने आप पर छिड़कते हुए पढ़े :-

तीर्थ स्नेयं तीर्थम्-एव, समानानां भवति, मानः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणङ्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़े :-

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच-भूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय, आत्मने नारायणाय-आधर-शक्तयै-समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः, पुष्पं नमः।

दीप को तिलक लगाते हुये तथा पुष्प चढाते हुये पढ़ें :-

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वत-स्तिमि-रापहः प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक लगााते हुये पढ़ें :-

वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढयो गन्धवत्-तमः आधरः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।

सूर्य भगवान का ध्यान करके थाली में तिलक पुष्प डालते हुये पढ़ें :-

नमो धर्म-निधानाय, नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष-देवाय भास्कराय नमो नमः।

कवली से थाल में जल डालते हुये पढ़ें :-

यत्रास्ति माता न पिता न बनधुः, भ्रातापि नो यत्र सुहृत जनश्च, न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधर-शक्तयै, दीप-धूप-संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु, दीपो नमः, धूपो नमः।

गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवतयै सिद्धलक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देवयै भवान्यै अभयंकरीदेव्यै भवान्यै क्षेमंकरीभगवत्यै सर्वशत्रुघातिण्यै इहराष्ट्राधिपतये आननदेश्वर भैरवाय इन्द्राय वज्रहसताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नेऋतये खड्ग-हस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय-गदा-हस्ताय ईशानाय, त्रिशुलहस्ताय ब्रह्मणे पद्यहस्ताये विष्णवे-चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः अग्नया-दित्याभ्यां वरुण-चन्द्रमोभ्यां कुमार-भौमाभ्यां विष्णु-बुधाभ्यां इन्द्रा-बृहस्पतिभ्यां, सरस्वती-शुक्राभ्यां, प्रजापति-शनैश्चराभ्यां गणपति-राहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्ता-गस्त्याभ्यं ब्रह्मणे कूम्र्मय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्मयै कमलायै शिख्यादिभ्यः पंच-चत्वारिंशत् वास्तोष्पति-याग-देवताभ्यः ब्राह्म्यादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गा-क्षेत्रा-गणेश्वर-देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिका-देवताभ्यः सिनीवाली-देवताभ्यः यामी-देवताभ्यः रौद्री-देवताभ्यः वारुणी देवताभ्यः बार्हस्पत्य-देवताभ्यः ऊँ भू र्देवताभ्यः ऊँ भूर्भवः सव र्देवताभ्यः अखण्ड-ब्रह्माण्ड-यागदेवताभ्यः धूर्भ्यः उपधूर्भ्याः महागायत्रयै सावित्रयै-सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वदुकादिभ्यः, उत्पन्नम्-अमृतं दिव्यं प्राक्क्षीरो-दधि-मन्थनात्-अन्नम्-अमृतरूपेण नैवेद्यं प्रति-गृहयताम्

ईष्ट देवता का ध्यान करते हुये पढ़े :–

उो ततसम्-ब्रह्म-अद्य तावत् तिथौ अद्य अमुक-मासस्य अमुक-पक्षस्य अमुक-तिथौ आत्मनो बाड्मनः कार्योपार्जित-पापनि वारणार्थम्, उों नमो नेवेधं निवेदसामि नमः।

"चुटू" को स्पर्श करते हुये पढ़े :–

रौद्रा-सौम्या धोरतरा परा। खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा।

चुटू को अंगूठे से तिलक लगाकर अर्धफूल डालते हुये पढ़ें :–

आकाश मातृभ्योऽन्नं नमः, आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः, अर्धो नमः पुष्पं नमः।

चुटू के सात म्यचियां अथवा सात छोटे प्रसाद के भाग रखे हुये होते हैं-

पहली म्यची को स्पर्श करते हुये पढ़े :-

भगवते वासुदेवाय अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः

दूसरी को स्पर्श करते हुये पढ़े :-

भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः

तीसरी को स्पर्श करते हुये पढ़े :-

भगवते विनायकाय अन्नंसमर्पयामि नमः

चौथी को स्पर्श करते हुये पढ़े :-

हां हीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः

पांचवी को स्पर्श करते हुये पढ़े :-

इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान्-मिष्ठानं-क्षीरं समर्पयामि नमः

अंतिम दो भागों या दो म्यचियों पर अर्ध पानी डालते हुयें पढ़े :-

यसिमन्-निवसति क्षेत्रो क्षेत्रपालाः सकिंकराः। तस्मै निवेदयाम्यद्य बलिं पानीय सुयंतम्, क्षां-क्षेत्राधिपतये अन्नं नमः रां राष्ट्राधिपतये अन्नं नमः-
सर्वाभ्य-वरप्रदो मयि पुष्टि पुष्टिपति-दधातु।

दोनों हाथ में फूल लेते हुये प्रणाम करते हुये पढ़े :-

आपन्नोस्मि शरण्योस्मि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवन्-त्वां-प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्। उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

तर्पण :- सीधा हाथ रखते हुये पढ़ें :-

नमो ब्रह्मणे, नमो अस्तवग्नये, नमः पृथ्व्यै, नमः औषिधिभ्यः, नमो वाचे नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते, कृणोमि, इत्येतासाम्-उव-देवतानां-सा-रि-ष्टिं -सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति-य एवं विद्वान-स्वाध्यायम्-अधीते।

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

।। पूर्णाहोती ।।

खड़े होकर भक्तजन हाथ में अथिफोल लीजिए

आरती

ऊँ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
जो ध्यावे फल पावे दुःखविनशे मन का, स्वामी दुःखविनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
मात-पिता तुम मेरे शरण पड़ूँ में किसकी, स्वामी शरण पड़ूँ में किसकी।
तुम बिन और ना दूजा आस करूँ में जिसकी, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
तुम-पूरण-परमात्म तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
तुम-करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता, स्वामी तुम पालन कर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति, स्वामी तुम सबके प्राणपति।
किस विधि मिलों दयामय तुमको मैं कुमति, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
दीन बन्धु दुःख हर्ता रखक तुम मेरे, स्वामी रक्षक तुम मेरे ।
अपने चरण लगावो द्वार पड़ा में तेरे, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
विषय विकार मिटाओं पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

मंत्र

आश्रावितं अत्याश्रावितं वषट्कृतं अवषट् कृतम्
अननूक्तं अत्यनूक्तं च। यज्ञे तिरिक्तं कर्मणो
यत् च हीनम् अग्नि स्तानि प्रविदन् एतु कल्पयन् स्वाहा

अन्त में कलश में से अमृतरुपी जल निकालकर वहाँ सभी जनों पर कलश लव छिड़के और पढ़े :-

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते स्वाहा।।

उमारवां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसो वचसा चोरसा मनसा च अष्टाँग नमस्कार करोमि नमः।।

शान्ति पाठ

ओं शन्नोमित्रा । शन्नो वरुणा
शन्नो भवत्वर्यमा । शन्नो इन्द्रो बृहस्पति ।
शन्नो विष्णुरुरूक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो।
त्वमेव प्रत्यक्ष ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्ष ब्रह्मा वदिष्यामि।
अृतंवदिष्यामि। सत्यंवदिष्यामि। तन्माम आवेत, तद्वक्तारम आवेत।
आवेत माम् आवेत वक्तारम। ऊँ शान्ति, शान्तिः शान्ति।
ऊँ द्यौ शन्ति, अन्तरिक्ष शान्ति, पृथ्वी शन्ति, अपाशान्ति,
औषधयः शान्ति, ब्रह्म शान्तिः सर्वः शान्ति शान्ति देव
शानित, सामा शान्तिः एधि।। ओम शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।
सर्वारिष्टा सुशान्तिर्भवन्तु ।। (यजु0 36 / 20)

।। प्रणाम ।।

नोट :- अव पंक्ति में एक एक करके हवन कुण्ड में श्रृद्धा से अतिफोल डालें फिर प्रसाद वितरण की ओर चलें ।

गीता माता की जय

गछ शरण गीताये, गीता पर्व लोलअ माये।
गीता बूजिव लोलअ माये।।

कामधीन छय चि गीता, पार्थ वुछ बन्योसना।
तम्य च्युव बजि श्रदाये।।

अति छु ज्ञान योग, कर्म योग, त्रावन्य वनन विषय भोग।
भक्ति योग छु बुड़ उपाये।।

तप जप ति छुय करनुय, दयसुन्द ध्यान दरनुय।
ज्ञान बुद्धि सु प्रावे।।

राग द्वेष वनान छु त्रावुन, काम क्रोध लूभ गालुन।
यिय वनान हर अध्याये।।

सतुगुणबुद्धि छि प्रावन्य, इन्द्रय छि शुमरावन्य।
शुद्ध अन्न छुस उपाये।।

शरणागत छुय बनुन, गीताय ज्ञानस दि वुन।
गली लूभ मोहच छाये।।

मन शुमरावुन छुय, अहंकार त्रावुन छुय।
शम, दम, यम, नियम दारे।।

गीता जी पउर्व बार बार, अति छु ज्ञानुक भंडार।
सत संगन मन्ज जायि जाये।।

मनुष्य जन्म छु मुशकिल, गीता जी छि तारनउक पुल।
अति छि काऽत्या उपाये।।

युस करि गीता प्रचार, बोजनावि गीतायि सार।
विज्ञान बुद्धि सु प्रावे।।

गीता जी छय अनमोल, व्यास जी ओस लेखन बोल।
श्री कृष्णान्य मुखअ दाये।।

गीता जी छि अरदाह अध्याय, हृदयस मंज करयोसंजाय।
अन्जरान छि कर्म न्याये।।

'द्वारिका' मो कर चेर, गीता जी परन्य जल नेर।
ग्वर देव च्य परनावे, गीता पर व लोल माये।।

गीता परय

श्री कृष्ण म्यानेय सत् ग्वरय।
गीता पॅरय, गीता पॅरय।।

गीता वॅनिथ चय पॉरथस,
ओसयु भक्त होंखथस रथस।
ज्ञानुक च होवुथत गरय।।
गीता पॅरय, गीता पॅरय।।०।।

गीता वॅनिथ पनुनि म्वख किन्य,
गंगा दरायि चान पाद किन्य।
महातम तार असि भवसरय।
गीता पॅरय, गीता पॅरय।।०।।

गीता प्रभातन युस पॅरय,
जिंदय सु भवसागर तरय।
बेयिन त सत्य तारि भवसरय।।
गीता पॅरय, गीता पॅरय।।०।।

कत्यन ॲन्यन गाश ओनुथ,
कत्यन कुल्यन ज्यव दिचथ।
तॉर्‌यथख लंगी यिम भवसरय।।
गीता पॅरय, गीता पॅरय।।०।।

गीता ज्ञान कृष्ण भावतम,
कुनती नन्दन मे ति जानतम।
बांसतम मे कृष्णो जर जरय।।
गीता पॅरय, गीता पॅरय।।०।।

राम दुबेश गछि त्रावुनय,
काम, क्रूध गॅछि गालनुय।
मल चल त तार बनि भवसरय।।
गीता पॅरय, गीता पॅरय।।०।।

अंहकार भगवान गालतम,
ज्ञानुक मे चांगा चालतम।
मतृ फिरनावतम गर गरय।।
गीता पॅरय, गीता पॅरय।।०।।

भानस तह जगतस कर त दया,
यिम गीता पॅरन कॅरज्यख रक्षा।
कामनायि कासतम सत् ग्वरय।।
गीता पॅरय, गीता पॅरय।।०।।

स्वामी कुमार जी गीता सत्संग आश्रम के साल भर मे मुख्य कार्यक्रम

(1)	गीता जयंती :–	मार्ग शुक्ल पक्ष एकादशी तीन दिन का कार्यक्रम
(2)	माघ का व्रत :–	महीने का पूरा व्रत
(3)	यज्ञ (हवन) :–	माघ पुर्णिमा तीन दिन का कार्यक्रम
(4)	नवदुर्गा :–	चतुर्थ शुक्ल पक्ष आमावस्या से 9 दिन का कार्यक्रम
(5)	जन्मदिन भब :– जी महाराज	बैशाख शुक्ल पक्ष द्वितिया दो दिन का कार्यक्रम
(6)	गुरू पुर्णिमा :–	आषाड पुर्णिमा एक दिन का कार्यक्रम
(7)	जन्माष्टमी :– जन्मसत्संग	भद्र कृष्ण पक्ष सप्तमी आठ दिन का कार्यक्रम
(8)	नव दुर्गा :–	साल में दो बार नौ दिन का कार्यक्रम

प्रार्थना

अजब हैरान हूँ भगवन तुम्हें कैसे रिजाऊ मैं
कोई वस्तो नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊ मैं

करें किस तोर आवाहन कि तुम हो घर जा
निरादर है बुलाने को अगर घंटी बजाऊ मैं

तुम ही हो मूरती में भी, तुम ही व्यापक हो फूलों में
भला भगवान पर भगवान को क्यों कर चढाऊ मैं

लगाना भोग कुछ तुम को यह एक अपमान करना है
खिलाता है जो सब जग को उस से क्यों कर खिलाऊ मैं

तुम्हारी ज्योति से रोशन हैं सूरज, चाँद और तारे
महा अंधेर है, कैसे तुम्हे दीपक दिखाऊ मैं

भुजायें हैं न गरदन है न सीना है न पेशानी
तुम हो नीर लीप नारायण कहाँ चंदन लगाऊ मैं

बड़े नादान हैं वे जन घड़ते आपकी मुरत
बनाता है जो सब जग को उसे क्यों कर बनाऊ मैं

ओम नमाः शिवाय, ओम नमाः शिवाय, ओम नमाः शिवाय
ओम शांति, ओम शांति, ओम शांति – ओम, ओम, ओम

जय गुरुदेव

गुरुदेव मेरे दाता हम को ऐसा वर दे
सेवा सुमर्ण सतसंग झोली में मेरे भर दे,
नफरत जो करे हम से हम उन से प्यार करें
करते जो हमारा बुरा उन का सत्कार करें
नफरत को मिटा कर प्रभु प्रेम का रस भर दें
गुरु देव...............

मन मन्दिर में केवल सतगुरु ही बा जाएँ
जिन को भी देखूँ मैं तेरा रूप नजर आए
दे ज्ञान का अमरत रस जीवन को सफल कर दें
गुरु देव...............

शबरी की तरह सेवा और प्यार हो मीरा का
श्रद्धा हो तुलसी की और ज्ञान हो गीता का
यह अरज है मेरी सदा सत गुरु पूरण कर दें।

भजन

अब सौंप दिया इस जीवन का,
सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में,
और हार तुम्हारे हाथों में।

मेरा निश्चय बस एक यही,
एक बार तुम्हे पा जाऊं मैं।
अर्पण कर दूं दुनियां भर का,
सब प्यार तुम्हारे हाथों में।

यदि जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ,
जैसे जल में कमल का फूल रहे।
मम अवगुण दोष समर्पित हों,
भगवान तुम्हारे हाथों में।

यदि मानुष का मुझे जन्म मिले,
तब चरणों का मैं पुजारी बनूं।
इस भक्त की तन मन की,
रहे तार तुम्हारे हाथों में।

जब जब संसार का कैदी बनूं,
निष्काम भाव से काम करूं।
फिर अंत समय में प्राण तजूं,
निराकार तुम्हारे हाथों में।

मुझ में तुझ में बस भेद यही,
मैं नर हूं आप नारायण हैं।
मैं हूँ संसार के हाथों में,
संसार तुम्हारे हाथों में।

OM NAMO BHAGWATI VASUDEVAYA
OM SHRI KRISHANAI NAMO NAMAH

Swami Kumar Ji Maharaj Geeta Satsang Ashram is founded by Swami Kumar Ji in the year 1997. Swami ji is not only a saint but a social worker so if we call him a social saint is too much fit for him. He brought a tremendous change in our society in every respect. It may be a Yegnopovit Cermany Kanayadan or Anitam Sanskar. He is working day and night to bring a change in our Society so that our community will servive in present circumstances.

In order to bring a change swami ji published Pat Sangra I in the year 2006 in which he showed how to perform Pooja and Arati in a short possible time not more than 1½ hour. That book was liked not only in Jammu but throught india where our community is now our Ashram is publishing Pat Sangra II in which Swami Ji tried his best to perform a Hawan in a short possible time. This book contains only one Mala of Ganesh Ji, Suri Baghwan, lord Shiva, Lord Vishnu & Maa Durga He is of the openion the our young generation are too busy & it is impossible for them to perform the long process of our heritage. For example if we will take the game of circket, in fifties and sixties it was a five day match and was liked by everyone. But due to the pessage of time it changed in to 50 overs match & was welcomed by young generation but again it was shortened and became 20 overs match and it liked be even small childrens. He thought that the need of the hour is to preserve our old heritage in shortest possible time whether it may be Hawan or Anitam Sanaskar. The main objective of this book is to save time.

As for as Anitam Sanskar is concerned Swami Ji says that our young generation has no time to perform the long tradition as we did. He gave an example of a young boy whose father died last year at Jammu. He came Jammu to perform the last rites of his father which took his nearly one month. After one month when he went bach to his work, the boss of the company showed him the door. He remained un-employed for about Six months. His only fault was that his father passed away. therefore Swami Ji says that only three days are important as far as our Karm Kand is concerned, ie, 10th, 11th & 12th day which should be performed according to our Karm Kand. His advice to the young generation to come on there three days & back to his duty so that he will not be humilated by the company or his boss.

Our Ashram is very thankful to **Shri P.L. Bakshi** who worked very hard under the super guidance of Swami Ji in making Urdu Translation of this book and too much thankful to **Shri Roshan Lal Kachroo Ji** who translated this book in Hindi. His contribution to this work will be remembered by the Ashram.

Hare Krishna

Written by :-

Shri Pridiman Ji Bali

A Devotee of the Ashram

मूल्य : यथा शक्ति